



An ISO 9001 : 2008 &
14001 : 2004 Certified Company

बीज पत्रिका BEEJ PATRIKA



● छमाही पत्रिका

● अक्टूबर—मार्च, 2017

● द्वितीय अंक



अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक इंडिया प्राइड पुरस्कार ग्रहण करते हुए





विनोद कुमार गौड़

मैं एन.एस.सी के सभी कार्मिकों व इसके पाठकों को छमाही राजभाषा पत्रिका 'बीज पत्रिका' के द्वितीय अंक के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई देता हूँ। यह पत्रिका लेखकों की साहित्यिक अभिरूचि, सृजनात्मक लेखन कला, तकनीकी लेखन कला इत्यादि के लिए एक रचनात्मक मंच प्रदान करेगी तथा पत्रिका की सामग्री पाठकों के लिए रुचिकर व उपयोगी साबित होगी।

राष्ट्रीय बीज निगम लिमिटेड 60 फसलों की लगभग 600 किस्मों के मूल तथा प्रमाणित बीजों का उत्पादन करता है। देश भर में राष्ट्रीय बीज निगम के लगभग 8500 बीज उत्पादक हैं, जो विभिन्न कृषि जलवायु परिस्थितियों में बीज उत्पादन का कार्य करते हैं। राष्ट्रीय बीज निगम भारत सरकार की विभिन्न योजनाओं जैसे तिलहन, दलहन, ऑयल पॉम तथा मक्का की एकीकृत योजना (आइसोपॉम) तथा राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के कार्यान्वयन में मुख्य भूमिका अदा करता है। भारत सरकार के अनुदान से निगम द्वारा रखे जा रहे बीज बैंक के अंतर्गत भी विभिन्न फसलों के बीज रखे जाते हैं ताकि बाढ़, सूखा इत्यादि प्राकृतिक आपदाओं के दौरान पैदा होने वाली मांग को पूरा किया जा सके।

इसके अतिरिक्त भारत सरकार की आम आदमी तक उचित दरों पर खाद्य सामग्री पहुँचाने की मुहिम को ध्यान में रखते हुए निगम ने अपने अमानक बीजों के मूल्य संवर्द्धन का कार्य शुरू किया है। निगम ने हाल ही में कृषि भवन तथा निगम मुख्यालय, नई दिल्ली पर दो खाद्य बिक्री केन्द्र खोले हैं। यह गुणवत्तापूर्ण खाद्य सामग्री, उपभोक्ताओं को बाजार दरों से कम दरों पर निगम के "फार्म सोना" ब्रांड के अंतर्गत उपलब्ध करवाई जा रही है। इससे न केवल निगम की आमदनी बढ़ेगी बल्कि खाद्य पदार्थ निगम के फार्मों से सीधे उपभोक्ता की रसोई तक पहुँचेगा। मुझे पूरा विश्वास है कि निगम अपने उच्च गुणवत्ता बीजों के साथ-साथ मूल्य संवर्द्धन के कार्यों में भी सफलता प्राप्त करेगा।

मैं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका निगम के कार्यकलापों को सभी कर्मचारियों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी तथा विभिन्न पाठ्य सामग्री एवं लेखों के माध्यम से मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक भी सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं सहित।

(विनोद कुमार गौड़)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

बीज पत्रिका BEEJ PATRIKA

मुख्य संरक्षक

श्री विनोद कुमार गौड़
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक

श्री संजय खताल
निदेशक (वाणिज्यिक)

श्री वी. मोहन
निदेशक (वित्त)

मुख्य संपादक

श्री ए.के. धिल्लियाल
अपर महा प्रबंधक (सतर्कता)

संपादक

श्रीमती दीपिका रानी
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

विषय सूची

	पृष्ठ सं.
1. सम्पादकीय	1
2. उत्तरोत्तर विकास के पथ पर अग्रसर	2
3. शाक वाटिका (उत्तर भारत)	5
4. बीज परिसंस्करण में ट्राइकोडर्मा का महत्व	6
5. एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन एवं बीज गुणवत्ता से धान बीजोत्पादन	8
6. अब्दुल कलाम—एक अतुलनीय व्यक्तित्व	11
7. सामाजिक नैगमिक दायित्व (सीएसआर)	12
8. केन्द्रीय राज्य फार्म, सूरतगढ बनाम भारत—रूस के राजनयिक संबंधों की 70वीं वर्षगांठ	14
9. तिरगें की शान	16
10. प्रैस रिलीज	17
11. बीज	18
12. नगदी रहित (कैसलेस) लेन—देन विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	19
13. वर्ष 2016—17 के दौरान सामाजिक दायित्व योजना के अंतर्गत सब्जी किट वितरण	20
14. विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्र	21—24
15. सतर्कता जागरूकता सप्ताह	25
16. पिता का स्नेह / ज्ञान	26
17. पढ़ना क्यों आवश्यक है?	27
18. आप भी हंसिये / बुलंद हौसले	28—29
19. गुणकारी घरेलू औषधियाँ / ठंडाई के लाभकारी नुस्खे	30—31
20. क्या कयामत है / दपर्ण की खूबी	32
21. बुढापा एक वरदान	33
22. लोभ सकल व्याधिन कर मूला	34
23. ज्ञान गंगा	35
24. कृषि दर्शन कार्यक्रम में निगम की उपस्थिति	36
25. सफलता के सोपान	37
26. सेवानिवृत्तियां	39
27. पदोन्नतियाँ	41

सम्पादकीय

राष्ट्रीय बीज निगम की गृह पत्रिका “बीज पत्रिका” का द्वितीय अंक आपके समक्ष है। पत्रिका के प्रथम अंक के सफल प्रकाशन के बाद द्वितीय अंक को और अधिक रोचक एवं जानकारी पूर्ण बनाने की चेष्टा की गई है। निगम की विभिन्न गतिविधियों पर भी प्रकाश डाला गया है, पाठकों से भी हमें काफी संख्या में लेख आदि मिल रहे हैं। जिनमें से अधिकतम लेखों को छापने का प्रयोग किया गया है। कृषि तकनीकी संबंधी जानकारी का भी समावेश किया गया है।

हमारा प्रयास है कि पत्रिका के माध्यम से कृषि संबंधी जानकारी सभी पाठकों तक पहुंचे तथा पाठकों को उनकी साहित्यिक प्रतिभा बढ़ाने का अवसर भी प्राप्त हो सके। अतः सभी पाठकों से अपेक्षा है कि वे अधिक से अधिक संख्या में जानकारी पूर्ण तथा रूचिकर साहित्य भेजकर पत्रिका का पाठ्य स्तर बढ़ाने में सहयोग करें।

पाठकों के लेखों एवं सुझावों का हम स्वागत करते हैं। आशा है कि “बीज पत्रिका” राजभाषा हिन्दी के उत्थान में भी भरपूर योगदान देने में समर्थ होगी। आइये हम सब भी इस कार्य में अपना सहयोग दें।

शुभकामनाओं सहित।

आपका

(ए. के. धिल्लियाल)

अपर महा प्रबंधक (सतर्कता)

किसी पर भरोसा करो तो
आखरी सांस तक करो,
या तो एक अच्छा दोस्त पाओगे
या एक अच्छी शिक्षा।

उत्तरोत्तर विकास के पथ पर अग्रसर रायचूर फार्म

संक्षिप्त परिचय

भारत सरकार द्वारा केन्द्रीय राज्य फार्म, ज्वालगेरा की स्थापना वर्ष 1969 में की गई। फार्म की स्थापना के लिए आवश्यक 2960 हैक्टेयर भूमि का अधिग्रहण कर्नाटक राज्य सरकार द्वारा वर्ष 1969 से 1974 के बीच किया गया। तत्पश्चात इसे भारत सरकार को सौंप दिया गया। भारत सरकार द्वारा कर्नाटक राज्य सरकार को 54.66 लाख रुपये भूमि की कीमत के रूप में भुगतान किया गया। अगस्त 1969 को भारतीय राज्य फार्म निगम की स्थापना के साथ यह फार्म इसकी एक इकाई के रूप में कार्यरत है। मई, 2014 में भारतीय राज्य फार्म निगम का विलय राष्ट्रीय बीज निगम लिमिटेड में होने से यह फार्म एनएससी की धरोहर बन गया।

यह फार्म तुंगभद्रा नदी के तट पर कर्नाटक राज्य के रायचूर जिले के सिन्धानूर तालुक में जिला मुख्यालय से दक्षिण-पश्चिम दिशा की ओर लगभग 80 कि.मी. दूर अवस्थित है।



मृदा

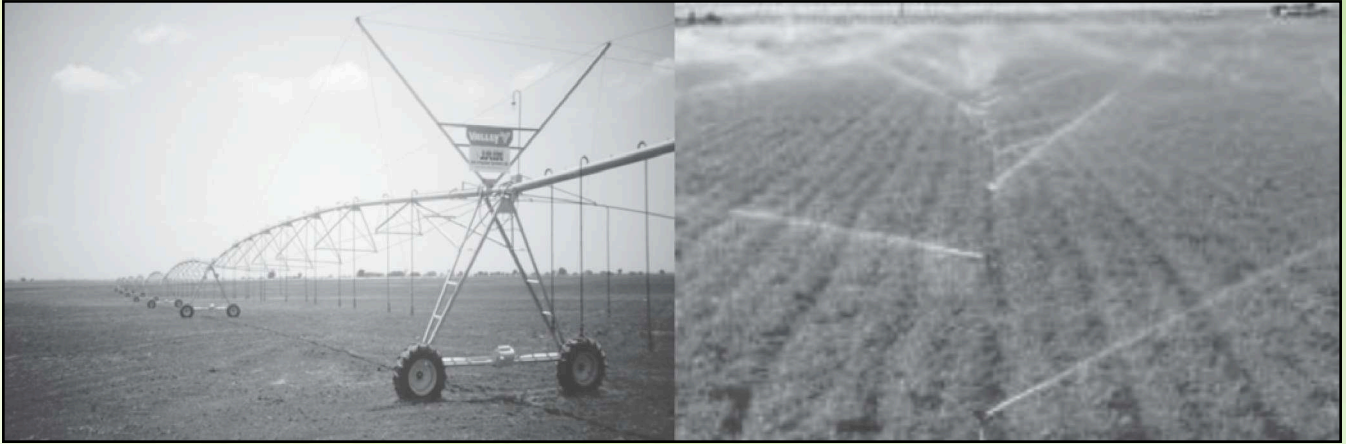
फार्म का संपूर्ण क्षेत्रफल कपास की गहरी काली मृदा से आच्छादित है, जिसका पीएच मान 7.8 से 8.8 है। भूमि का ढाल 1-3% है।

समय-समय पर मृदा परीक्षण करवा कर उचित मात्रा में खाद एवं उर्वरक प्रयोग करने का प्रयास किया जायेगा ताकि गुणवत्ता युक्त अधिकतम पैदावार ली जा सके।

सिंचाई

फार्म का केवल 1000 हैक्टेयर क्षेत्र ही सिंचित है। फार्म की संपूर्ण सिंचाई व्यवस्था तुंगभद्रा बंध से निकली LBC नहर की 54 R वितरिका ने इसकी उप वितरिका के पानी पर आधारित है। यद्यपि फार्म को 42 क्यूसेक पानी का अधिकृत निकास सिंचाई

विभाग द्वारा प्रदत्त है, परन्तु फार्म में अवस्थिति नहर के अंतस्थ छोर पर होने के कारण एवं अग्र छोर पर अधिक भूमि का प्रमुख कारण रहा है। इसके लिए फार्म पर धुरी सिंचाई पद्धति एवं रेन गन पद्धति प्रयोग में लाई जा रही है।



फार्म पर सिंचाई की व्यवस्था में सुधार हेतु महत्वपूर्ण कदम उठाये जा रहें हैं। जैसे कि तालाबों की संख्या बढ़ाई जा रही है तथा उथले तालाबों का गहरीकरण किया जा रहा है। मेड़बंदी का कार्य जोर-शोर से किया जा रहा है ताकि वर्षा जल का संरक्षण उचित तरीके से किया जा सके और मृदा के अपरदन को रोका जा सके।

भूमि विकास

क्र.सं.	विवरण	क्षेत्र (हैक्टेयर में)
1	कुल क्षेत्र	2960.00
2	कृषि योग्य क्षेत्र	2635.00
3	ले आउट क्षेत्र	325.00
4	कृषित क्षेत्र	2300.00
4 क	सिंचित क्षेत्र	1000.00
4 ख	असिंचित क्षेत्र	1300.00
5	विकसित किए जाने योग्य क्षेत्र	335.00
6	सिंचाई के स्रोत	TBL/LBC/Dist- 54

मुख्य उत्पाद

फार्म पर उत्पादित मुख्य फसलें धान, मक्का, ज्वार, अरहर, चना, जूट इत्यादि फसलों के साथ-साथ सब्जी के बीज तैयार किये जाते हैं।

बीज विधायन

फार्म पर उत्पादित सभी फसलों के बीजों का विधायन किया जाता है। विधायन कर्नाटक राज्य बीज जैविक एवं प्रमाणीकरण संस्था के अधिकारियों की देख-रेख में किया जाता है। तत्पश्चात विधायित बीज को प्रयोगशाला में परीक्षण हेतु भेजा जाता है। उच्च गुणवत्ता वाले बीजों को ही बीज की श्रेणी में रखा जाता है। वर्तमान समय में यहां पर तीन बीज विधायन संयंत्र एवं उचित संख्या में बीजों के संग्रहण हेतु गोदाम उपलब्ध है।



यांत्रिकी

यह फार्म संपूर्ण यांत्रिक फार्म है। इसमें केन्द्रीय कार्यशाला है जहां से पूरे फार्म की मशीनरी की मरम्मत एवं देख-रेख का कार्य सुनिश्चित किया जाता है। विभिन्न उन्नत तकनीकी यंत्रों के अलावा विभिन्न कंपनियों के ट्रैक्टर एवं अन्य कृषि यंत्रों का परीक्षण किया जाता है।

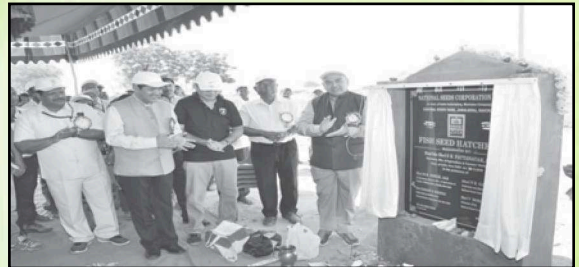
फोडर ब्लॉक

देश में पशु चारे की कमी को देखते हुए मुख्यालय एवं कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के सहयोग से फार्म पर फोडर ब्लॉक का निर्माण किया गया है। जिसके तहत चारे को ब्रिक्स के रूप में देश के कोने-कोने तक पहुंचाया जाएगा जिससे पशु चारे की बढ़ती हुई मांग को पूरा किया जा सके। आगामी अप्रैल से चारे की ब्रिक्स का व्यवसायिक उत्पादन आरंभ करने की योजना है।



मत्स्य पालन

मुख्यालय एवं कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के सहयोग से फार्म पर मछली पालन का कार्य चल रहा है तथा मत्स्य बीज उत्पादित करने का कार्यक्रम है। जिसे शीघ्र भी कार्यान्वित किया जाएगा।



आवासीय व्यवस्था

मुख्यालय द्वारा फार्म पर आठ नये आवासीय मकानों के निर्माण का अनुमोदन प्राप्त हुआ था। जिसमें से चार आवासीय मकान बन कर तैयार हो गये हैं तथा अन्य चार आवासीय मकान का निर्माण कार्य मार्च-17 तक करवा लिया जायेगा।

लोक कल्याणकारी कार्यक्रम

फरवरी-17 से फार्म पर कर्नाटक राज्य पथ परिवहन निगम की बस का संचालन शुरू हो गया जिससे कि फार्म से सिन्धनूर का आवागमन सुगम हो गया है।

कर्मचारी कल्याण को देखते हुए शुद्ध पेयजल आपूर्ति हेतु फिल्टर प्लांट की स्थापना हेतु कार्य शुरू हो गया है जोकि मार्च-17 के अंत तक बनकर तैयार हो जायेगा जिससे स्वच्छ पेयजल उपलब्ध करवाया जा सकेगा।

(शिवपाल सिंह)

फार्म प्रमुख

केन्द्रीय राज्य फार्म, ज्वालगेरा, रायचूर



शाक वाटिका (उत्तर भारत)

सफल शाकवाटिका एक आकस्मिक नहीं अपितु सुनियोजित योजना तथा स्वास्थ्यपूर्ण सब्जियाँ उगाने की अभिलाषा रखने का परिणाम है। शाकवाटिका की सफलता में अनेक तथ्यों का योगदान है। प्रस्तुत पुस्तिका में दिए गये सुझाव घरेलू शाकवाटिका/विद्यालय वाटिकाओं/सामुदायिक वाटिकाओं आदि के लिए हैं, लेकिन व्यापारिक उद्देश्य से सब्जियाँ उगाने की दृष्टि से भी ये सुझाव अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं।

शाकवाटिका के लाभ

शाकवाटिका के अनेक लाभ हैं। इसका सन्तोषजनक परिणाम यह है कि इससे आपको स्वस्थ रहने, समृद्ध बनने व बुद्धिमान बनने में सहायता मिलेगी।

स्वास्थ्य: इससे आपको ताजा हवा, खनिजों एवं विटामिनियों से युक्त भोजन मिलेगा। वाटिका में कार्य करने से शारीरिक व्यायाम भी हो जाता है।

समृद्धि: इससे आप अपने परिवार का भोजन संबंधी बजट तैयार कर सकेंगे और आपको व्यक्तिगत बचत में भी सहायता मिलेगी।

बुद्धिमत्ता: इससे आपको आवश्यकता पड़ने पर ताजा और अच्छी सब्जियाँ मिल जायेंगी और साथ ही साथ खरीदने के लिए बाजार में जाने का आपका बहुमूल्य समय भी बचेगा। इसके अतिरिक्त, अपनी मेहनत से पैदा की गई सब्जियों का स्वाद कुछ और ही होता है।

बुवाई तथा पौधारोपण की समय सारणी

ग्रीष्मकाल: बुवाई का समय: जनवरी-मार्च

फसल: चौलाई, करेला, भिण्डी, लौकी, शिमला मिर्च, बैंगन, मिर्च, लोबिया, कद्दू, टमाटर, तरबूज, फ्रैंचबीन, ककड़ी, खीरा, ग्वार, घीया, तोरी, टिण्डा, खरबूजा आदि।

खरीफ: बुवाई का समय: जून-जुलाई

फसल: चौलाई, भिण्डी, करेला, बैंगन, गोभी (अगेती), सेम, घीया, तोरी, प्याज, ग्वार, मिर्च, लोबिया, टमाटर, खीरा, ककड़ी, लौकी आदि।

रबी: बुवाई का समय: सितम्बर-नवम्बर

फसल: चुकन्दर, गांठगोभी, सरसों, सलाद, बैंगन, बन्दगोभी, फूलगोभी, (अगेती तथा पछेती), गाजर, मेथी, प्याज, पालक, मटर, आलू, टमाटर, शलगम आदि।

बीज परिशंस्करण में ट्राइकोडर्मा का महत्व

कृषि खाद्यान्न पर मनुष्य की निर्भरता तथा आधुनिक जीवन शैली में स्थायित्व की ललक ने ही मनुष्य को संयोजित एवं व्यवस्थापक कृषि पद्धतियों को अपनाने को प्रेरित किया होगा। सदियों पुरानी कृषि खेती की इसी बारम्बारता पद्धति के कारण वर्तमान में तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए भोजन जुटाना कठिन चुनौती बनता जा रहा है। तेजी से संकुचित होती जा रही कृषि भूमि तथा अत्यधिक दोहन के साथ अंसतुलित होती पर्यावरणीय परिस्थितियों ने इस समस्या को और भी विकट बना दिया है। हरित क्रान्ति के दौर में आधुनिक कृषि को बढ़ावा देने के प्रयास में हमने अत्यधिक रसायनों जैसे कीटनाशक, फफूँदनाशी, खरपतवारनाशी तथा रासायनिक उर्वरकों का उपयोग किया जिससे कि अधिक उपज की प्राप्ति हुई। इसी क्रम में कृषि योग्य भूमि दिन प्रतिदिन दूषित होती चली गयी तथा मृदा के अंदर उपस्थित लाभकारी सूक्ष्म जीवों की संख्या कम होती चली गई। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार प्रतिवर्ष लगभग 10 लाख लोग रासायनिक विषाक्तता के कारण बीमार होते हैं और उनमें से लगभग 20 हजार लोगों की मृत्यु हो जाती है। कृषि की दृष्टि से पादप रोग कारकों की रासायनिक रोगनाशी के प्रति उत्पन्न प्रतिरोधक क्षमता के कारण अब रसायनों का प्रयोग संतोषजनक नहीं रहा है, इसी के साथ-साथ रोगजनकों की नई-नई विभेदे पैदा हो रही है जिससे कि पौधों की प्रतिरोधक क्षमता में ह्रास के कारण प्रतिरोधी प्रजातियों का प्रयोग भी अधिक समय तक उपयुक्त नहीं है। अतः पर्यावरण हितैषी जैविक नियंत्रण करना चाहिए।

जैविक नियंत्रण में ट्राइकोडर्मा का उपयोग किया जाता है। ट्राइकोडर्मा एक कवक है जो इस विधि में एक जीव दूसरे जीवन पर परजीवी रूप में रहते हैं तथा उनको नियंत्रित करते हैं। ट्राइकोडर्मा हारजिएनम तथा ट्राइकोडर्मा विरिडी दो प्रभेद बहुत प्रचलित हैं। आखिर किस प्रकार ट्राइकोडर्मा द्वारा पादप रोगों को नियंत्रण किया जाता है, आगे वर्णित है।

परजीविता—ट्राइकोडर्मा कवक रोगजनक (पौधों में बीमारी फैलाने वाले कवक) के शरीर से चिपककर उसकी बाहरी परत को कुछ प्रति जैविक पदार्थों द्वारा गलाकर उसके अंदर का संपूर्ण पदार्थ उपयोग कर लेता है, जिससे रोगकारक जीव नष्ट हो जाता है।

प्रतिजैविकता— इस प्रक्रिया में ट्राइकोडर्मा विभिन्न प्रकार के प्रतिजैविक पदार्थों को उत्पन्न करता है जो रोगजनकों के लिए जहर का काम करता हैं।

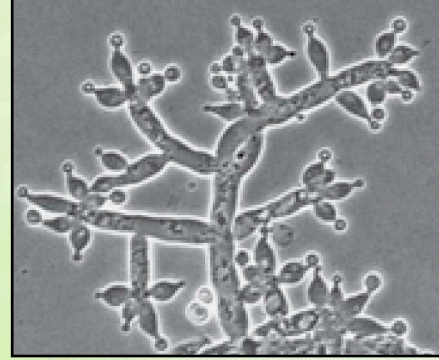
प्रतिस्पर्धा— इस क्रिया में जैव नियंत्रक वातावरण में उपलब्ध पोषक पदार्थों, जल एवं स्थान के लिए रोगजनकों से स्पर्धा करते हैं।

उपचार किस प्रकार से करें

ट्राइकोडर्मा के बीजाणु को चॉक के पाउडर के साथ मिलाते हैं, जिससे कि बीजाणु की संख्या 10^8 से 10^9 (लगभग दस अरब प्रतिग्राम) बनी रहे तथा उपरोक्त प्रकार से तैयार सामग्री को तौलकर 100, 250, 500 ग्राम तथा 01 किलोग्राम बीज की दर से बीजों उपचार किया जाता है। छोटे आकार के दाने के बीजों के लिए 100 ग्राम तथा बड़े आकार के बीजों के लिए 250 ग्राम का एक ट्राइकोडर्मा पैकेट एक एकड़ जमीन में बोये जाने वाले बीजों को उपचारित करने के लिए पर्याप्त होता है। बीजों को उपचारित करने से पहले सबसे पहले एक लीटर पानी में लगभग 100 ग्राम गुड़या शक्कर डालकर खूब उबाल दें और इसे ठंडा करने के बाद पैकेट खोलकर पाउडर में इस शरबत को आवश्यकता अनुसार थोड़ा-थोड़ा इस प्रकार डालें कि वह गाढ़ा घोल बन जाये तथा इसी के साथ यह भी ध्यान रखे कि अधिक पतला होने पर बीजों पर चिपकाने, सुखाने तथा बुवाई करने में मुश्किल होती है। अब यह बीजों को उपचारित करने वाला घोल बन जायेगा। बीजों के ऊपर इस घोल को थोड़ा-थोड़ा डालकर स्वच्छ स्थान या कपड़े पर हाथों से इस प्रकार मिलायें कि बीजों के ऊपर ट्राइकोडर्मा के पाउडर की परत चढ़ जायें। घोल की मात्रा बीजों की



आकृति व उनके आकार तथा उनके वजन के ऊपर निर्भर करती है। बड़े आकार के बीजों के लिए अधिक तथा छोटे आकार के बीजों के लिए कम घोल तैयार किया जाता है। ट्राइकोडर्मा से उपचारित बीजों को छाया में साफ कपड़े पर सुखाये तथा अति शीघ्र बुवाई कर दें ताकि बीजों पर चिपके बीजाणु कम से कम नष्ट हों। जिन फसलों की पौध लगायी जाती है उनकी रोपाई करने से पूर्व पौध की जड़ों को उक्त घोल में डुबाकर उपचारित किया जाता है तथा यह भी ध्यान रखा जाता है कि उपचारित घोल में कोई रासायनिक फफूँदनाशी नहीं मिलानी चाहिए अन्यथा ट्राइकोडर्मा के बीजाणु मृत हो जायेंगे और फसलों में इसका कोई लाभ नहीं होगा।



पौधों में रोग पैदा करने वाले विभिन्न रोगजनकों के विपरीत प्रभाव

फसलों तथा सब्जियों के कई रोग मृदा में उपस्थित मृदाजनित सूक्ष्म जीवियों द्वारा होता है। यदि बीजों का उपचार ट्राइकोडर्मा नामक कवक से किया जाता है तो फसल की हानि इनके प्रयोग से 70-80 प्रतिशत तक कम होती है जो विभिन्न अनुसंधान केन्द्र के प्रयोगों से पुष्टि हो चुकी है। उदाहरण के तौर पर धान के खेत के शीथ ब्लाइट तथा बकानी रोग सबसे अधिक नुकसान पहुँचाते हैं, जो क्रमशः राइजोक्टोनिया तथा फ्यूजेरियम नाम हानिकारक कवक से होते हैं। ट्राइकोडर्मा के प्रयोग से इन रोगों का पूर्णरूपेण अथवा आंशिक रूप से विनाश हो जाता है। फसलों तथा सब्जियों के खेतों में फ्यूजेरियम राइजोक्टोनिया, पिथियम, फाइटोपथोरा, निओवोसिया, स्कलेरोटीनिया, स्कलरोशिय, क्लेविसेप्स इत्यादि कवकों तथा मिलोइडीगाइन सूत्र कृमि द्वारा उत्पन्न रोगों के नियंत्रण में ट्राइकोडर्मा का प्रयोग प्रभावी है।

जैव नियंत्रक के लाभ

रासायनिक रोगनाशकों की अपेक्षा अत्यधिक सस्ता होता है। मानव स्वास्थ्य एवं पर्यावरण पर कोई दुष्प्रभाव नहीं है। मृदा में रहने वाले अन्य लाभदायक जीवों पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता है तथा मृदा के उपस्थित लाभकारी जीवों की संख्या को बढ़ाता है। रोगों में इनके प्रति प्रतिरोधिता नहीं पनपने पाती है।

ट्राइकोडर्मा के उपयोग में सावधानियाँ

ट्राइकोडर्मा क्षारीय मृदा में कम उपयोगी है तथा खेत में उपचारित बीज की बुवाई के पूर्व उचित नमी होनी चाहिए। ट्राइकोडर्मा की जीवन क्षमता या सेल्फ लाइफ कमरे के तापक्रम पर 03 माह तथा रेफरीजिरेटीड दशाओं में 06 माह तक भंडारित किया जा सकता है।

प्रेम चन्द्र (अपर महा प्रबंधक)

विकास चौधरी (सहायक अधिकारी बीज) एवं

रणपाल सिंह (सहायक अधिकारी बीज)

मुख्यालय

एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन एवं बीज गुणवत्ता से धान बीजोत्पादन

खरीफ फसलों में, धान प्रमुख फसल होने के कारण, धान बीजोत्पादन देश के किसानों के लिए महत्वपूर्ण है। यह उल्लेखनीय है कि देश में धान की औसत उपज में वृद्धि हो रही है लेकिन औसत उपज एवं उत्पादकता और बढ़ाने की जरूरत है यदि कृषक बन्धु स्थानीय परिस्थितियों की अनुकूलता के आधार पर धान की संस्तुत प्रजातियों का चयन करते हुए आनुवांशिक व भौतिक रूप से शुद्ध बीज बोये एवं मृदा परीक्षण के आधार पर संतुलित उर्वरकों, हरी खाद, मृदा सुधारकों, समन्वित पोषक तत्व प्रबंधन का समय से एवं संस्तुत मात्रा में प्रयोग करें तो उत्पादकता एवं उच्च आर्थिक लाभ के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।



हर फसल की भांति धान की फसल को भी अपने पूरे विकास व उपज के लिए 17 पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। जैसा कि हम जानते हैं कि हरित क्रांति के उद्भव के साथ ही रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग बढ़ गया है। साथ ही उत्पादन में भी आशातीत वृद्धि हुई है। यहाँ यह बताना आवश्यक है कि प्रारंभ में नत्रजन रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग ज्यादा बढ़ा, बाद में फास्फेटिक एवं पोटैशिक उर्वरकों का परंतु अन्य आवश्यक पोषक तत्वों जैसे सल्फर, जिंक, कॉपर, बोरॉन, मोनीब्लेडेनम इत्यादि के उर्वरकों को प्रयोग नहीं करने से मृदा में इन तत्वों की कमी होने लगी। फसल को इन तत्वों की आवश्यकता के अनुरूप अनुपलब्धता के कारण पिछले दो दशकों में खाद्यान उत्पादन में ठहराव सा आ गया है। फर्टीलाइजर एसोसिएशन ऑफ इंडिया ने 1997 में अपने आंकड़ें प्रस्तुत करके देश में बढ़ रहे असंतुलित उर्वरकों के प्रयोग से होने वाले मृदा व फसलों के नुकसान के बारे में चेताया था। आंकड़ों के अनुसार एन.पी.के.एस का संतुलित अनुपात 4:2:1:1 होना चाहिए परंतु पंजाब व उत्तरप्रदेश आदि राज्यों में यह 8:3:1:0:2 है।

उल्लेखनीय है कि अंधाधुन्ध असंतुलित रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से न केवल मृदा स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। साथ ही अंतरराष्ट्रीय बाजार में उर्वरकों की कीमतों में तीव्र वृद्धि के कारण उर्वरक आयात के लिए



न केवल बहुमूल्य विदेशी मुद्रा का बहिर्गमन देश से हो रहा है, बल्कि सब्सिडी का भार भी देश पर पड़ता है। मृदा के जीवांश में हो रहे लगातार ह्रास से बढ़ती आबादी के सापेक्ष खाद्यानों उत्पादन पर प्रश्न चिह्न लग गया है।

एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन का अर्थ है कि हम पारिस्थितिकी एवं उपलब्ध सामाजिक, आर्थिक संसाधनों का बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग कर अधिकतम उपज प्राप्त करते हुए मृदा उर्वरकता में कमी न आने दे। साथ ही जैविक खाद, फसल अवशेष, हरी खाद, जीवाणु खाद व रासायनिक खाद का इस सामंजस्य से प्रयोग करें जिससे मृदा उर्वरता व फसल उत्पादकता दोनों में वृद्धि हो। जैविक खादें, जैव उर्वरक मृदा को पोषक तत्व तो देते ही हैं, साथ ही मृदा सुधारक का कार्य भी करते हैं। अतः इन का उर्वरकों के समतुल्य पोषक तत्व का विवरण **सारणी-1** से समझा जा सकता है।

सारणी-1 उर्वरकों के समतुल्य पोषक तत्व का विवरण		
सामग्री	निवेश की मात्रा	उर्वरकों के रूप में पोषक तत्वों की समतुल्य मात्रा
क) जैविक खादें / फसल अवशेष	प्रति टन	3.6 कि.ग्रा., NPK
गोबर की खाद ढेंचा की हरी खाद गन्ने की खोई धान की पुआल / जलकुंभी	45 दिन की फसल 5 टन प्रति हैक्टेयर 5 टन प्रति हैक्टेयर	50-60 कि.ग्रा. N 12 कि.ग्रा. N प्रति टन 20 कि.ग्रा. N प्रति टन
ख) जैव उर्वरक राजोबियम / एजैक्टोबैक्टेरकल्चर एजोस्फिरिल मनील हरित शैवाल एजोला	10 किग्रा प्रति हैक्टेयर 6-21 टन प्रति हैक्टेयर	19-22 कि.ग्रा. N 20 कि.ग्रा. N 20-30 कि.ग्रा. N 3-5 कि.ग्रा. N प्रति टन हैक्टेयर में

धान बीजोत्पादन में एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन के महत्व को निम्न बिन्दुओं से समझा जा सकता है:-

1. नर्सरी से पौध तैयार करने की प्रक्रिया में भूमि का चयन इस प्रकार से करें, जहां खरपतवार की संभावना कम हो एवं मृदा परीक्षण रिपोर्ट के अनुसार जैविक खाद एवं उर्वरकों का संतुलित प्रयोग करने के साथ धान नर्सरी में पीलापन दिखाई दें तो घुलनशील पोषक तत्वों (एनपीके) एवं सूक्ष्म पोषक तत्व का पर्णिय छिड़काव प्रारंभिक अवस्था में किया जा सकता है। इसी समय ट्राइकोडरमा का छिड़काव भी हितकर रहता है।
2. 25-30 दिन बाद नर्सरी तैयार होने पर रोपाई के समय पौध पर लगी मिट्टी को झटके नहीं इसके पोषक तत्वों के ह्रास के साथ रोग प्रसार की संभावनाएं बढ़ती हैं।
3. संस्तुत प्रजातियों की पोषक तत्व भाग एवं मृदा परीक्षण रिपोर्ट के अनुसार रोपाई के समय से पूर्व हरी खादों, कम्पोस्ट खादों, फसलविष्ट जैविक पदार्थों का प्रयोग जैव उर्वरकों फास्फेट को घुलन शील बनाने वाले बैक्टीरियल अल्ट्रा तथा फंगल बायोफर्टीलाइजर प्रयोग करने से मृदा स्वास्थ्य में सुधार होता है।
4. NPK उर्वरकों का प्रयोग फसल व्यवस्था के आधार पर संतुलित मात्रा में होना चाहिए। हम जानते हैं कि नत्रजन फसल की वानस्पतिक बढ़ावर में मुख्य रूप से सहायता करती है एवं पोटैश बीज में चमक एवं गुणवत्ता के लिए जिम्मेदार है। अतः बुवाई के समय नत्रजन की संस्तुत मात्रा क्रमशः फुटान एवं पहली सिंचाई पर करें। यूरिया के वाष्पीकरण से बचने के लिए शाम के समय खेत में डालें। पूर्व में फसल गेहूँ हो और उसमें फास्फोरस का प्रयोग हुआ हो तो बुवाई के समय फास्फोरस ना डालें अन्यथा मृदा परीक्षण रिपोर्ट के अनुसार P एवं K की पूरी मात्रा का प्रयोग बुवाई के समय किया जा सकता है।

5. धान में S एवं Zn पोषक तत्वों की सप्लाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए। सल्फर NPK की तरह चौथा मुख्य पोषक तत्व है। आजकल WDG तकनीक की सल्फर बाजार में मिलती है जिसका प्रयोग 3 किलोग्राम प्रति एकड़ के हिसाब से यूरिया के साथ मिलाकर किया जा सकता है। यूरिया के साथ मिलाने से यूरिया के वाष्पीकरण नुकसान को बचाने के साथ सल्फर N को धीरे-धीरे जड़ों तक पहुंचाती है। Zn के लिए जिंक सल्फेट 20 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर के हिसाब से करना हितकर रहता है। ध्यान रहे जिंक सल्फेट को किसी अन्य उर्वरक के साथ ना मिलाये।
6. एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन का प्रयोग धान बीजोत्पादन में करने से फसल की उपज-बीज की गुणवत्ता एवं मृदा सुधार में आश्चर्यजनक रूप से जो लाभ प्राप्त होते हैं, उन्हें निम्न प्रकार से समझा जा सकता है:-

(क) फसल की उपज पर प्रभाव:-

- धान के द्वितीयक जड़ों एवं उनके मूल रोमों का विकास होता है जिससे फसलों को पोषक तत्वों को लेने में सहायता मिलती है।
- प्रकाश संश्लेषण की क्रिया के लिए आवश्यक क्लोरोफिल की क्रियाशीलता बढ़ती है जिससे भोजन ज्यादा बनाने के साथ उपज बढ़ती है।
- एकत्रित भोजन दाने की तरफ ट्रांसपोर्ट ज्यादा होता है जिससे दाने का भार एवं संख्या बढ़ती है।

(ख) बीज की गुणवत्ता पर प्रभाव:-

- धान में प्रोटीन की मात्रा बढ़ती है।
- विपरीत परिस्थितियों में (स्ट्रेच) में एंटीऑक्सीडेंट एन्जाइमों की क्रियाशीलता बढ़ती है जिससे फसल को होने वाला नुकसान कम होता है।
- बीमारियां कम लगती हैं जिससे बीज की गुणवत्ता के साथ भार व आकार भी बढ़ता है।

(ग) मृदा स्वास्थ्य पर प्रभाव

यदि मृदा का पीएच ज्यादा हो तो ऐसी अवस्था में सूक्ष्म पोषक तत्व यदि पर्याप्त मात्रा में पड़ें हों तो फिर भी फसल की जड़ों का अप्राप्य रहते हैं। ऐसी अवस्था में सल्फर जैसे तत्वों का प्रयोग करने से मृदा की पीएच को कम करता है जिससे सभी सूक्ष्म पोषक तत्व जड़ों को प्राप्य हो जाते हैं।

समस्त पोषक तत्वों का संतुलित पूर्ति के लिए पानी में घुलनशील पोषक तत्वों का प्रयोग जैसे N:P:K 20:20:20 200 ग्राम/15 लीटर पानी एवं सल्फर 100 ग्राम प्रति 15 लीटर सूक्ष्म पोषक तत्व 100 ग्राम प्रति 15 लीटर पानी का छिड़काव फूटान एवं पैनीकल आने पर किया जा सकता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि बढ़ती आबादी, घटती भूमि, बढ़ती जरूरत, घटती पैदावार, घटती जमीन की शक्ति क्या है समाधान? एक ही है समाधान एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन अपनाएं एनएससी के बीज के साथ।

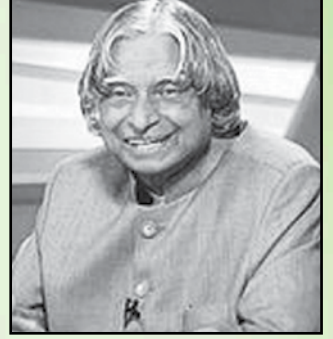
(डॉ राजेश कुमार दाधीच)

प्रबंधक (उत्पादन)

केन्द्रीय राज्य फार्म, सरदारगढ़



अब्दुल कलाम-एक अतुलनीय व्यक्तित्व

पूरा नाम	अवुल पकिर जैनुल्लाब्दीन अब्दुल कलाम	
अन्य नाम	मिसाइल मैन	
जन्म	15 अक्टूबर, 1931	
जन्म भूमि	रामेश्वरम, तमिलनाडु	
मृत्यु	27 जुलाई, 2015	
मृत्यु स्थान	शिलांग, मेघालय	
पति/पत्नी	अविवाहित	
नागरिकता	भारतीय	
प्रसिद्धि	भारतीय मिसाइल कार्यक्रम के जनक	
पद	भारत के 11वें राष्ट्रपति	
कार्य काल	25 जुलाई, 2002 से 25 जुलाई, 2007	
शिक्षा	स्नातक	
विद्यालय	मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेकनालॉजी	
भाषा	हिन्दी, अंग्रेजी, तमिल	
पुरस्कार-उपाधि	भारत रत्न (1997), पद्म विभूषण (1990), पद्म भूषण (1981), इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार एवं देशी-विदेशी कई विश्वविद्यालयों से मानद डॉक्टरेट की उपाधि	
संबंधित लेख	अब्दुल कलाम के अनमोल वचन	
पुस्तकें	'विंग्स ऑफ़ फ़ायर' (जीवनी), 'इण्डिया 2020-ए विजन फॉर दन्यू मिलेनियम', भारत की आवाज, टर्निंग प्वाइंट्स, हम होंगे कामयाब	
अन्य जानकारी	डॉक्टर कलाम ने भारत के विकास स्तर को 2020 तक विज्ञान के क्षेत्र में अत्याधुनिक करने के लिए एक विशिष्ट सोच प्रदान की। यह भारत सरकार के 'मुख्य वैज्ञानिक सलाहकार' भी रहे।	

अमूल्य विचार!

- ◆ "सपना वो नहीं है, जो आप नींद में देखो, सपने वो हैं जो आपको नींद ही ना आने दें।"
- ◆ "एक अच्छी पुस्तक हजार दोस्तों के बराबर होती है, जबकि एक अच्छा दोस्त एक लायब्रेरी (पुस्तकालय) के बराबर होता है।"

सामाजिक नैतिक दायित्व (सीएसआर)

1. प्रस्तावना :

प्राचीन काल से देश में यह परम्परा रही है कि धनवान लोग व बड़े कारोबारी, जिनकी अधिक आय थी वह अपने धन का कुछ हिस्सा दरिद्रों पर तथा जन सामाजिक कार्यों पर व्यय करते थे। कुछ लोग भण्डारा इत्यादि भी करते थे, गरीबों को कपड़ा बांटते थे यह सब होता था परन्तु यह सब काम उनके विवेक पर आधारित था तथा कोई वैधानिक प्रावधान सरकार द्वारा नहीं बनाया गया था।

2. प्रारम्भ :

सीएसआर गतिविधियों की औपचारिक प्रारम्भिक अवस्था डीपीई द्वारा 2002 से कम स्तर पर सीएसआर का कार्यक्रम लोक उद्यमों में प्रारम्भ करवाया गया जोकि न तो प्राइवेट व्यक्तियों पर और न ही प्राइवेट सैक्टर की कम्पनियों पर लागू था। तत्पश्चात सीएसआर के विषय में डीपीई द्वारा समय-समय पर संशोधन किया गया। 2007 व 2010 में दिशा-निर्देश जारी किए गए, ये दिशा- निर्देश भी लोक उद्यमों पर ही लागू थे।

3. सीएसआर का वैधानिक स्तर :

कम्पनी अधिनियम, 2013 जोकि 01.04.2014 से प्रभावी हुआ, के तहत धारा-135 व इसके अंतर्गत नियमों में सीएसआर संबंधी विस्तृत प्रावधान किया गया। इसमें यह प्रावधान किया गया कि सीएसआर के तहत प्रत्येक कम्पनी जिसकी नेटवर्थ रू0 500 करोड़ या अधिक अथवा बिक्री राशि रू0 1000 करोड़ या अधिक रही अथवा सकल लाभ (नेट प्रोफिट) जोकि 5 करोड़ रुपये या अधिक हो, तो उन्हें वित्तीय वर्ष के अंतर्गत एक सीएसआर कमेटी जिसमें निदेशक मंडल के तीन या अधिक सदस्य हों और उन सदस्यों में न्यूनतम एक सदस्य स्वतन्त्र डायरेक्टर भी हो, बनाई जाएगी। इस कमेटी को कम्पनी अपनी निदेशक रिपोर्ट में दर्शाएगी। उपरोक्त कमेटी का यह कार्य होगा कि अधिनियम की VII वीं अनुसूची व सीएसआर प्रावधानों के तहत एक सीएसआर पालिसी बनाएगी जिसमें सीएसआर के तहत की जाने वाली गतिविधियों के तौर-तरीकों का वर्णन होगा। इसके अलावा यह पालिसी निगम की वेबसाइट पर भी डाली जाएगी। कमेटी विभिन्न प्रस्तावों पर खर्च की जाने वाली धन राशि के बारे में भी अपनी अनुशंसाएं देगी तथा सीएसआर के तहत की जाने वाली क्रियाओं की निगरानी भी समय-समय पर करेगी। सीएसआर कमेटी की अनुशंसाओं के तहत निदेशक मंडल इन प्रस्तावों को अनुमोदित करेगा तथा तदनुसार प्रस्ताव कार्यान्वित होंगे।

4. सीएसआर के तहत खर्च की जाने वाली धन राशि की सीमा :

कम्पनी द्वारा अपने पिछले लगातार तीन वर्षों के लाभ का औसत निकाल कर उसका 2% सीएसआर बजट के रूप में निदेशक मंडल से अनुमोदित कराएगी तथा स्वीकृत प्रस्तावों पर उसी बजट राशि से खर्च करेगी तथा समस्त प्रक्रियाएं सीएसआर पालिसी के तहत होंगी। इस संबंध में यह भी ध्यान में रखना होगा कि सीएसआर के तहत जो प्रस्ताव क्रियान्वित किए जा रहे हैं वो निगम की विभिन्न इकाइयों की स्थानीय सीमा के अधीन हों। नकारात्मक टिप्पणी सीएसआर के प्रावधानों में यह स्पष्ट रूप से बताया गया है कि सीएसआर बजट के तहत सारी धन राशि उसी वित्तीय वर्ष में विभिन्न प्रस्तावों पर जोकि कम्पनी की सीएसआर पालिसी निश्चित की थी तथा कम्पनी अधिनियम, 2013 के तहत है, पर खर्च की जाएगी परन्तु यदि कम्पनी सीएसआर की धन राशि उस वित्तीय वर्ष में किसी कारण खर्च करने में असमर्थ रहती है तो कम्पनी के निदेशक मंडल अपनी रिपोर्ट में कारण दर्शाएंगे कि सीएसआर की धनराशि किस कारण से खर्च नहीं की जा सकी।



5. जुर्माना :

धारा 134 (8) कम्पनी अधिनियम में यह भी प्रावधान किया गया है कि अन्य क्रियाओं के अलावा यदि सीएसआर संबंधी प्रावधान का उल्लंघन किया जाता है तो 25 लाख रुपये का जुर्माना कम्पनी के उस अधिकारी पर लगाया जाएगा जिसने नियमों को तोड़ा हो। साथ ही जेल की सजा भी हो सकती है जोकि अधिकतम तीन साल है तथा साथ में फाईन भी लग सकता है जोकि 50,000/- रुपये से प्रारम्भ होकर 5 लाख रुपये तक हो सकता है या दोनों ही सजाएं हो सकती हैं। इस प्रकार यदि ध्यान दिया जाए तो यह बात स्पष्ट है कि भारत सरकार का ध्यान इस ओर अधिक है कि सीएसआर की जो धन राशि जन समुदाय के उपयोग के लिए रखी गई है, उसका दुरुपयोग न हो और उसका खर्च करने में कम्पनी के निदेशक मंडल व सीएसआर कमेटी द्वारा हीलाहवाली न की जाए।

6. सीएसआर पर कराधान का प्रभाव :

यद्यपि सीएसआर की धन राशि जन समुदाय पर ही व्यय की जा सकती है परन्तु यह याद रखने की बात है कि सीएसआर की धन राशि कम्पनियों के कर्मचारियों पर कतई भी खर्च न की जाये। जहां तक कराधान की बात है कम्पनियों पर सीएसआर की धन राशि पर न तो कोई रिबेट मिलेगा और न ही आयकर में कोई छूट मिलेगी।

निष्कर्ष :

सीएसआर के प्रावधानों पर दृष्टि डालने से यह स्पष्ट है कि सरकार का आशय गरीब व आम जनता के लाभ हेतु निर्धारित क्रियाएं करवाना है, जिसके लिए एक निर्धारित ढांचा तैयार करके कम्पनी अधिनियम, 2013 के तहत डाल दिया गया है। उल्लंघन करने पर लम्बे दण्ड का भी प्रावधान किया गया है। अतः यह देश हित की बात है कि कम्पनियों के नियमानुसार सीएसआर की धन राशि विभिन्न क्रियाओं पर खर्च करें जिससे कि देश व आम जनता व गरीब जनता का भला हो सके तथा उनको विभिन्न प्रकार की सुविधाएं मिल सकें।

(मो. राकिम)

कम्पनी सचिव, मुख्यालय

लघु कथा

अमूल्य समय

समय अमूल्य है। जिन्दगी में एक वर्ष का क्या महत्व है, फेल हुए विद्यार्थी से पूछिए। एक माह का महत्व जानना है तो उस माँ से मिलिये जिसने 08 माह के बच्चे को जन्म दिया है। सप्ताह का महत्व जानना है तो साप्ताहिक पत्रिका के संपादक से मिलिये। एक दिन का महत्व जानना है तो दिहाड़ी-मजदूर से मिलिये जिसे आज मजदूरी नहीं मिली है। एक घंटे का महत्व जानना है तो सिकंदर से पूछिए जिसने आधा राज्य देकर एक घंटे मौत को टालने का यमराज से आग्रह किया था। एक मिनट का महत्व उस भाग्यशाली से पूछिए; जो वर्ल्ड ट्रेड सेंटर की इमारत गिरने से ठीक एक मिनट पहले ही बाहर सुरक्षित निकला था। अब बचा एक सेकंड जिसका महत्व उस धावक से पूछिए जो इसी एक सैंकेड की वजह से स्वर्ण पदक पाते-पाते रजत पदक पर रह गया।

(श्वेता जैन)

कनिष्ठ सहायक (लेखा)

प्रक्षेत्र कार्यालय, इंदौर

केन्द्रीय राज्य फार्म, सूरतगढ बनाम भारत-रुस के राजनयिक संबंधों की 70वीं वर्षगांठ

राष्ट्रीय बीज निगम लिमिटेड के नियंत्रणाधीन यंत्रिकृत केन्द्रीय राज्य फार्म, सूरतगढ की स्थापना को 70 वर्ष पूरे हो गए हैं। इस फार्म की स्थापना वर्ष 1956 में भारत के पहले यंत्रिकृत फार्म के रूप में की गई थी, इस फार्म के लिए रुस के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री निकिता एस. ख्रुश्चेव द्वारा भारत-रुस मैत्री के अंतर्गत 70 लाख के कृषि मशीनरी एवं यंत्रों की भेंट करने का प्रस्ताव दिया था और तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू द्वारा यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया था तथा पं.जवाहर लाल नेहरू द्वारा ही प्रथम यंत्रिकृत फार्म, केन्द्रीय राज्य फार्म, सूरतगढ की नींव रखी गई थी।



तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा इस वाहन पर फार्म का दौरा किया गया था जो अभी तक केन्द्रीय राज्य फार्म, सूरतगढ की वर्कशॉप में मौजूद है।

रुसी सूरतगढ फार्म की स्थापना के समय कृषिगत ढांचा तैयार करने के लिए हर प्रकार की सहायता के लिए रशियन कृषि तकनीशियन और वैज्ञानिक फार्म पर रुके थे। रुसी अभियंताओं और तकनीशियन ने पूर्ववर्ती सोवियत रुस द्वारा भेंट की गई कृषि मशीनरी का प्रशिक्षण भारतीय तकनीशियन तथा अभियंता को दिया तथा केन्द्रीय राज्य फार्म, सूरतगढ पर यंत्रिकृत कार्यशाला तैयार की जहां हर प्रकार के कृषिगत उपकरण और सामग्री तैयार किया जा सकता है। सूरतगढ फार्म पर कृषि की शुरुआत रुस मशीनरी एवं वाहनों से ही की गई थी। रुस के तकनीशियन और कृषि वैज्ञानिकों ने रेगिस्तान के थार मरुस्थल में कृषि यंत्रों की स्थापना की जिसका लाभ पंजाब और आसपास के स्थानों



पर खेती करने में हुआ। रूस के तकनीशियनों/प्रतिनिधियों के अलावा तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री निकिता एस.खुश्चेव ने स्वयं 13 फरवरी, 1960 को केंद्रीय राज्य फार्म, सूरतगढ़ का दौरा किया।

कृषि मंत्रालय ने राष्ट्रीय बीज निगम को सूरतगढ़ फार्म की स्थापना की 70 वीं वर्षगांठ के अवसर पर भारत-रूस संबंधों को मजबूती देने के लिए रूसी प्रतिनिधियों के साथ एक समारोह का आयोजन करने की सलाह दी है जिस पर विचार विमर्श किया जा रहा है।

(8)

Date	Name	Address	DATE OF DEPARTURE
14/59	Jawaharlal Nehru Indira Gandhi	New Delhi	2/4/59
1/59 59	K. S. Mehta	PA to Prime Minister, New Delhi Security officer, P.M.'s House, N.D.	2-4-59

आगंतुक रजिस्टर में तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू के हस्ताक्षर आज भी केंद्रीय राज्य फार्म सूरतगढ़ में सुरक्षित हैं।

नियुक्ति

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा हाल ही में राष्ट्रीय बीज निगम के निदेशक मंडल में गैर सरकारी निदेशक (स्वतंत्र निदेशक) के रूप में श्रीमती प्रतिभा सुमन की नियुक्ति की गई है। इन्होंने 25.03.2017 को अपना कार्यभार संभाल लिया है। वे हरियाणा राज्य के कई सामाजिक संगठनों से जुड़ी हैं।

श्रीमती प्रतिभा सुमन निदेशक मंडल की गैर सरकारी सदस्य के अतिरिक्त निदेशक मंडल की अंकेक्षण समिति (Audit Committee) एवं "नामांकन व पारिश्रमिक समिति" (Nomintion & Remuneration Committee) की अध्यक्ष एवं नैगमिक सामाजिक उत्तरादायित्व (सीएसआर) उप समिति की सदस्या भी बनाई गई हैं। निदेशक मंडल में जहां एक ओर उन्होंने स्वतंत्र निदेशक का प्रभार ग्रहण किया है वहीं उन्हें एक महिला निदेशक होने का श्रेय भी प्राप्त है।

तिरंगों की शान

ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आए हैं?
माँ, मेरा मन बात ये समझ न पाये हैं।
ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आए हैं?

पहले पापा मुन्ना-मुन्ना कहते आते थे,
टॉफियों खिलौने साथ में भी लाते थे,

गोदी में उठाकर खूब खिल-खिलाते थे,
हाथ फेर सिर पर, प्यार भी जताते थे,

पर न जाने आज वे क्यों चुप हो गए,
लगता है कि खूब गहरी नींद सो गए।

नींद से पापा उठो, मुन्ना बुलाए हैं,
ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आए हैं।

फौजी अंकलों की भीड़ घर क्यों आई हैं,
पापा का सामान साथ में क्यों लाए हैं।

साथ में क्यों लाए है वो मेडलों के हार
ऑख में आसूँ क्यों सबके आते बार-बार

चाचा, मामा, दादा, दादी चीखते हैं क्यों,
माँ मेरी बता वो सर पर पीटते हैं क्यों?

गाँव क्यों शहीद पापा को बताए हैं
ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आए हैं?

माँ तू क्यों है इतना रोती, ये बता मुझे,
होश क्यों हर पल है खोती, ये बता मुझे,

माथे का सिंदूर क्यों है दादी पोंछती,
लाल चूड़ी हाथ में, क्यों बुआ तोड़ती,

काले मोतियों की माला, क्यों उतारी है।
क्या तुझे माँ हो गया समझना भारी है।

माँ तेरा ये रूप मुझे न सुहाये है।
ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आए हैं?

पापा कहीं हैं, जा रहे अब ये बताओं माँ,
चुपचाप से आसूँ बहाकर यू सताओ न,

क्यों उनको सब उठा रहे हाथों को बांधकर
जय हिन्द बोलते हैं क्यों कन्धे पर लादकर,

दादी खड़ी है क्यों भला ऑचल को भींचकर
आसूँ क्यों बहे जा रहे हैं आखँ मीचकर

पापा की राह में क्यों फूल ये सजाए हैं
ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आए हैं?

क्यों लकड़ियों के बीच में पापा लिटाए हैं।
सब कह रहे हैं, लेने उनको राम आए है

पापा, ये दादा कह रहे तुमको जलाऊँ मैं,
बोलो भला, इस आग को कैसे लगाऊँ मैं,

इस आग में समा के साथ छोड़ जाओगे,
ऑख में आसूँ होंगे, बहुत याद आओगे

अब आया समझ, माँ ने क्यों आसूँ बहाये थे,
ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आए हैं?
ओढ़ के तिरंगा क्यों पापा आए हैं?

श्रीमती शान्ता शर्मा
सहायक निजी सचिव, मुख्यालय



राष्ट्रीय बीज निगम द्वारा प्रदत्त सेवाएं

राष्ट्रीय बीज निगम लिमिटेड 60 फसलों की लगभग 600 किस्मों के मूल तथा प्रमाणित बीजों का उत्पादन करता है। देश भर में राष्ट्रीय बीज निगम के लगभग 8500 बीज उत्पादक हैं, जो विभिन्न कृषि जलवायु परिस्थितियों में बीज उत्पादन का कार्य करते हैं।

निगम के अंतर्गत 10 क्षेत्रीय कार्यालय, 8 फार्म, 66 प्रक्षेत्र कार्यालय हैं। निगम अपने फार्मों पर तथा बीज उत्पादकों के द्वारा 15 लाख क्विंटल बीज पैदा करता है। बीज उत्पादन में तिलहन, दलहन तथा संकर एवं सब्जियों के बीजों के उत्पादन पर विशेष जोर दिया जाता है। निगम के लगभग 2800 डीलर हैं, जो कुल बिक्री की 70 प्रतिशत से अधिक बिक्री करते हैं।

राष्ट्रीय बीज निगम भारत सरकार की विभिन्न योजनाओं जैसे तिलहन, दलहन, ऑयलपॉम तथा मक्का की एकीकृत योजना (आइसोपॉम) तथा राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के कार्यान्वयन में मुख्य भूमिका अदा करता है। किसानों को हाल ही में जारी की गई अच्छी किस्मों कोमिनिकिट की आपूर्ति करके नई किस्मों को अपनाने में भी मुख्य भूमिका अदा करता है। भारत सरकार के अनुदान से निगम द्वारा रखे जा रहे बीज बैंक के अंतर्गत भारी मात्रा में विभिन्न फसलों के बीज रखे जाते हैं ताकि बाढ़, सूखा इत्यादि प्राकृतिक आपदाओं के दौरान पैदा होने वाली मांग को पूरा किया जा सके।

यह बड़े हर्ष की बात है कि भारत सरकार की आम आदमी तक उचित दरों पर खाद्य सामग्री पहुँचाने की मुहिम को ध्यान में रखते हुए निगम ने अपने अमानक बीजों को मूल्य संवर्द्धन के बाद चावल, आटा, बेसन, दालें, सरसों का तेल, दलिया, ओट इत्यादि बनाने का कार्य शुरू किया है और इसके लिए निगम ने हाल ही में कृषि भवन तथा निगम मुख्यालय, नई दिल्ली पर दो खाद्य बिक्री केन्द्र खोले हैं। यह गुणवत्तापूर्ण खाद्य सामग्री उपभोक्ताओं को बाजार दरों से कम दरों पर निगम के "फार्म सोना" ब्रांड के अंतर्गत उपलब्ध करवाई जायेगी। इससे न केवल निगम की आमदनी बढ़ेगी बल्कि अमान्य बीजों का सदुपयोग भी होगा तथा साथ ही खाद्य पदार्थ निगम के फार्मों से सीधे उपभोक्ता की रसोई तक पहुँचेगा।

वर्तमान वर्ष में करीब 500 क्विंटल चावल, 300 क्विंटल आटा तथा 200 क्विंटल दलहन ग्राहकों तक पहुँचाने का लक्ष्य है। निगम ने इसके लिए एफएसएसआई (FSSAI) का लाईसेंस प्राप्त कर लिया है तथा खाद्य सामग्री का उत्पादन अत्यंत स्वच्छ व स्वास्थ्यकर अवस्था में किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त निगम केन्द्रीय राज्य फार्म, रायचूर, कर्नाटक पर चारा ब्लॉक बना रहा है तथा मछलियों के बीजों का उत्पादन करने में प्रगतिशील है।

मुझे पूरा विश्वास है कि निगम अपने उच्च गुणवत्ता बीजों के साथ-साथ मूल्य संवर्द्धन के कार्यों में भी सफलता प्राप्त करेगा।

बीज

कृषि में बीज—उत्पादन का तूफान उठ रहा है।
बीजों में बीज, एन.एस.सी का बीज बिक रहा है।।
कृषकों में खुशहाली का प्रतीक बन रहा है।
बीजों में बीज, एन.एस.सी का बढ़िया बीज बिक रहा है।।

खेती करनी तूने सिखाई बढ़िया बीज बनाकर।।
भारत में खुशहाली आई फसल उत्पादन बढ़ाकर।।
फोडर बीज निकाल कर, पशु चारे में नाम बिक रहा है।
बीजों में बीज, एन.एस.सी का बीज बिक रहा है।।

मानक स्तर पर बीज—गुणवत्ता में अपनी पहचान बनाई है।
दाल—सब्जी और अनाज बीजों में क्रान्ति फैलाई है।।
बाजारों में बीज बिक्री का डीलर नेटवर्क बन रहा है।
बीजों में बीज एन.एस.सी का बीज बिक रहा है।।

कानूनी अपराधों में एक सीड एक्ट बनाया है।
सन 1966 में राष्ट्रीय बीज निगम ने अपनाया है।।
भारत के दूर—दराजों में, बीज उत्पादन की धूम मच रही है।
सबसे ज्यादा बीजों में एनएससी का बीज बिक रहा है।।

खेत और खलिहानों में एनएससी ने धूम—मचायी है।
गरीब से गरीब किसानों ने खुशहाली की जोत जलाई है।।
सरकारी—गैर सरकारी में बीज की मांग बढ़ रही है।
शुद्धता की उच्च श्रेणी में एन.एस.सी का नाम बिक रहा है।।

कृषि में बीज उत्पादन का तूफान आ रहा है।
बीजों में बीज एन.एस.सी का बीज बिक रहा है।।

(मदन मोहन)
बीज अधिकारी
प्रक्षेत्र कार्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)



नगदी रहित (कैसलेस) लेन-देन विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

प्रक्षेत्र कार्यालय, सफेदाबाद

दिनांक 21.12.2016 प्रक्षेत्र कार्यालय, एनएससी, सफेदाबाद में किसानों एवं एनएससी, डीलरों को कैसलेस अर्थव्यवस्था विषय पर प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया, यह कार्यक्रम भारत सरकार के आदेश के अनुसरण में किया गया। कार्यक्रम में क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ से क्षेत्रीय प्रबंधक डॉ. पंकज कुमार त्यागी की अध्यक्षता में कार्यक्रम सुनिश्चित हुआ। उक्त अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय के प्रबंधक (वित्त एवं लेखा) डॉ. अभिषेक ओझा, सहायक प्रबंधक (विपणन), श्री सुभाष गुप्ता व प्रक्षेत्र प्रबंधक श्री एस.एस. चौधरी, एनएससी, गोरखपुर भी उपस्थित हुए। प्रशिक्षण कार्यक्रम में जनपद अंबेडकर नगर, बाराबंकी, रायबरेली और लखनऊ के किसान बड़ी संख्या में उपस्थित हुए तथा एनएससी के अनेकों डीलरों ने भी भाग लिया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में सहायक प्रबंधक (विप.), श्री गुप्ता ने एनएससी के उद्देश्य व बीज उत्पादन – विपणन के कार्यरूप को अवगत कराया। प्रबंधक (वित्त एवं लेखा) डॉ. ओझा ने नगदी रहित (कैसलेस) लेन-देन कैसे करें इसके लिए क्या-क्या आ सकता है, नगदी रहित (कैसलेस) लेन-देन के माध्यम क्या-क्या हैं, उपरोक्त विषय पर पीओएस मशीन के प्रयोग का प्रशिक्षण भी दिया गया। क्षेत्रीय प्रबंधक डॉ. त्यागी ने आये हुए किसानों व बीज विक्रेताओं का कार्यक्रम में स्वागत किया व उक्त विषय पर किसानों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए व कैसलेस अर्थव्यवस्था को व्यावहारिक जीवन में अपनाने का आवाहन किया तथा फसल उत्पादन में बीज प्रतिस्थापना (एसएमआर) दर को बढ़ाने से राज्य व देश की सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में वृद्धि करने पर बल दिये। प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रक्षेत्र कार्यालय सफेदाबाद में नगदी रहित (कैसलेस) लेन देन के लिए पीओएस मशीन उपलब्ध करायी गई एवं कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए किसानों, बीज विक्रेताओं व आयोजकों को धन्यवाद दिया। इसके बाद प्रशिक्षु (कृषि) श्री विनोद कुमार ने किसानों को बिना ईंटरनेट के मोबाईल के माध्यम से बैंक खाता का लेन-देन में उपयोग कैसे करें विषय में मोबाईल पर प्रशिक्षण दिया। इस कार्यक्रम में एनएससीके एमओयू पार्टनर मै. नुजीवीडु सीड्स के प्रतिनिधि श्री सीमित सिंह ने किसानों को खीरा के किस्म NSC-740-छ (करीना) की खेती की तकनीकी जानकारी को विस्तार से बताया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के उपरांत क्षेत्रीय प्रबंधक ने प्रशिक्षण विषय पर किसानों से प्रश्न पूछे और प्रश्न के उत्तर देने वाले कृषकों को संकर बीज पैकेट उपहार में भेंट कर समानित्त किया। कार्यक्रम के अंत में प्रक्षेत्र प्रबंधक श्री पी.एम. वार्ष्णेय, एनएससी, सफेदाबाद ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आभार प्रकट किया व प्रक्षेत्र कार्यालय, सफेदाबाद में नगदी रहित (कैसलेस) लेन-देन अपनाने का आश्वासन दिया। कार्यक्रम का विधिवत संचालन क्षेत्रीय कार्यालय के लेखाधिकारी, श्री के.पी. वर्मा ने किया।

क्षेत्रीय कार्यालय, पटना

राष्ट्रीय बीज निगम लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय पटना में दिनांक 30.12.2016 को कैश लेस लेन-देन व्यवस्था के प्रशिक्षण हेतु जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में राष्ट्रीय बीज निगम लिमिटेड, पटना के साथ जुड़े हुए किसानों, बीज उत्पादकों, विक्रेताओं तथा अन्य स्टेक होल्डर्स तथा सभी समस्त निगम कर्मियों द्वारा सक्रियता से भाग लिया गया। कार्यक्रम के दौरान भारतीय स्टेट बैंक के स्थानीय मुख्यालय, पटना से वरिष्ठ प्रबंधक, श्री रविकांत राय तथा भारतीय स्टेट बैंक की आई.जी.आई.एम.एस शाखा के प्रबंधक, श्री संजय कुमार द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। भारतीय स्टेट बैंक के पदाधिकारियों द्वारा आडियो विजुअल माध्यम से कैश लेस, लेन-देन करने हेतु नवीनतम तकनीकों को विस्तार से बताया तथा इस प्रकार के लेन देन में बरती जाने वाली समस्त सावधानियों को भी स्पष्ट किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान श्रोताओं द्वारा भी कैश लेस वित्तीय व्यवस्था के संबंध में अपनी जिज्ञासा/प्रश्न पूछे गए जिनका प्रशिक्षकों ने पूर्ण समाधान किया। इस प्रकार सभी प्रशिक्षु एवं प्रशिक्षकों की सक्रिय भागीदारी से उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम अत्यंत ज्ञानोपरक एवं सार्थक रहा।

वर्ष 2016-17 के दौरान सामाजिक दायित्व योजना के अंतर्गत सब्जी किट वितरण

क्षेत्रीय कार्यालय, राष्ट्रीय बीज निगम लि., पटना द्वारा सामाजिक दायित्व योजना के अंतर्गत बिहार राज्य के मोतिहारी जिले के पांच ब्लॉक केसरिया, कल्याणपुर, हरिसिद्धी, टाउन हाल मोतिहारी, पूर्वी चंपारण, अरेराज में सब्जी की खेती एवं ग्राम का विकास के तहत अधूरा 5000 सब्जी बीज किट का जरूरतमंद किसानों को सफलतापूर्वक वितरण किया गया। सब्जी बीज किट के अंदर 12 सब्जियों के बीज इस उद्देश्य के साथ प्रदान किये गये कि सभी लाभान्वित किसान अपना तथा अपने आस-पास उपस्थित अन्य परिवारों को इन सब्जियों की खेती कर उपलब्ध करा सकें तथा हरी सब्जियों का उत्पादन एवं उपभोग कर अधिकांश विटामिन एवं पोषक तत्व प्राप्त कर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकें।

सब्जी बीज के किटों का दो दिवसीय वितरण कार्यक्रम का प्रखंडवार संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है:-

क्र. सं.	दिनांक	समय	स्थान	प्रखंड	वितरीत सब्जी बीज किटों की संख्या
1	21/10/16	10.00-11.30	केसरिया हाई स्कूल केसरिया	केसरिया	800
2	21/10/16	11.30-2.00	किशोर हाई स्कूल सिसवा, पटना	कल्याणपुर	1200
3	21/10/16	04.00-06.00	हाई स्कूल गायघाट, हरिसिद्धी	हरिसिद्धी	1000
4	21/10/16	10.00-12.00	टाउन हाल मोतिहारी, पूर्वी चंपारण	मोतिहारी	1000
5	21/10/16	03.00-06.00	म. शिवशंकर गिरी महाविद्यालय, अरेराज	अरेराज	1000

इस वितरण कार्यक्रम के दौरान, राष्ट्रीय बीज निगम के क्षेत्रीय प्रबंधक, श्री ओंकार सिंह, प्रक्षेत्र प्रबंधक, मुजफ्फरपुर, श्री आनंद कुमार, प्रबंधक (गुण नियंत्रण), श्री आर.एस. चंदेल एवं सहायक प्रबंधक (विपणन), श्री प्रशान्त शर्मा उपस्थित रहे तथा क्षेत्रीय प्रबंधक, श्री ओंकार सिंह द्वारा किसानों को संबोधित करते हुए सब्जी बीजों की खेती से होने वाले आर्थिक एवं स्वास्थ्य लाभ के संबंध में विस्तार से चर्चा की तथा किसानों को सब्जी बीजों की खेती/रकवा बढ़ाने पर जोर दिया। इसके अतिरिक्त भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी के निदेशक डॉ विजेन्द्र सिंह एवं अन्य वैज्ञानिक भी वितरण कार्यक्रम के दौरान उपस्थित रहे तथा उनके द्वारा किसानों को सब्जी बीज खेती की नवीनतम एवं उन्नत तकनीकों की जानकारी देते हुए, उक्त वितरण कार्यक्रम को इसकी उद्देशिका के तहत सफल बनाने का सराहनीय कार्य किया गया। इसके अतिरिक्त प्रत्येक प्रखंड में वितरण कार्यक्रम के दौरान संबंधित प्रखंड के गणमान्य नागरिक भी उपस्थित रहे तथा वितरण कार्यक्रम को सामाजिक दायित्व योजना के अंतर्गत किए गए इस वितरण कार्यक्रम का दैनिक समाचार पत्र द्वारा भी कवरेज किया गया तथा राष्ट्रीय बीज निगम की इस पहल एवं कार्य की भूरि-भूरि सराहना की गई।

(ओंकार सिंह)

क्षेत्रीय प्रबंधक

क्षेत्रीय कार्यालय, पटना



विभिन्न मेलों में भागीदारी एवं मिनीकिट वितरण



खाद्य सामग्री बिक्री केन्द्र का उद्घाटन



कौसलेस व्यवस्था पर प्रशिक्षण



गुण नियंत्रण प्रयोगशाला



फार्मों पर विभिन्न गतिविधियाँ



लाभांश भेंट



सतर्कता जागरूकता सप्ताह



सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत क्षेत्रीय प्रबंधक तथा कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारीगण।



सतर्कता जागरूकता सप्ताह

गत वर्षों की भांति इस वर्ष सतर्कता जागरूकता सप्ताह दिनांक 31.10.2016 से 05.11.2017 तक मनाया गया। इस दौरान निगम के मुख्यालय तथा अन्य सभी क्षेत्रीय कार्यालय एवं फार्मों पर भी सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। दिनांक 31.10.2016 को सभी कार्यालय में उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सतर्कता शपथ दिलवाई गई। मुख्यालय में सतर्कता विषय पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। स्लोगन तथा क्विज प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। इस अवसर पर श्रीमती सुंदरी सुब्रमन्यम पुजारी, महा निदेशक, रक्षा संप्रदा (सेवानिवृत्त) को मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। श्रीमती पुजारी, जो आईआरसीटीसी में मुख्य सतर्कता अधिकारी भी रही हैं, ने अपने कार्यकाल के अनुभवों को साझा किया।

सतर्कता सप्ताह के दौरान सतर्कता विभाग द्वारा निविदा प्रक्रिया पर एक पुस्तिका (जनरल गाइडलाईन आन टेंडरिंग प्रोसीजर) का भी विमोचन किया गया जिसमें निविदा प्रक्रिया के दौरान ध्यान रखने योग्य चैक प्वाइंट तथा सतर्कता आयोग के विभिन्न अनुदेशों को भी सम्मिलित किया गया है। इसकी प्रति सभी क्षेत्रीय कार्यालय एवं फार्मों तथा मुख्यालय के सभी विभागों को उपलब्ध करवा दी है।

केन्द्रीय सतर्कता आयोग के निर्देशानुसार सभी कार्यालयों तथा व्यक्तियों को ईमानदारी की शपथ दिलवाई गई। शपथ पत्र की प्रति सतर्कता आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध है। राष्ट्रीय बीज निगम ने भी आयोग द्वारा निर्धारित प्रारूप में ईमानदारी की शपथ (Integrity Pledge) ली। निगम के उच्च अधिकारियों द्वारा भी ईमानदारी की शपथ ली गई।

निगम के सभी क्षेत्रीय कार्यालयों तथा फार्मों पर भी सतर्कता सप्ताह के दौरान विभिन्न गतिविधियां आयोजित की गईं।

राष्ट्रीय बीज निगम लिमिटेड, पटना में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का प्रारंभ दिनांक 30.10.2016 को सतर्कता जागरूकता सप्ताह का बैनर कार्यालय परिसर में मुख्य स्थान पर लगा कर किया गया। प्रातः 11.00 बजे क्षेत्रीय प्रबंधक की अध्यक्षता में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सामूहिक रूप से शपथ ग्रहण कर **“अपना कार्य पूरी ईमानदारी एवं बिना पक्षपात के करने की प्रतिज्ञा ली”**।

वीरेन्द्र सिंह

सहायक अधिकारी (सतर्कता), मुख्यालय

लघु कथा

फूल और पत्थर

दो दोस्त थे, आपस में बात करते थे। एक दोस्त ने कहा : मेरा छोटा सा परिवार है। परिवार में पत्नी, दो बच्चे और माँ बाप है। माँ बाप भी हमारे साथ रहते हैं। दूसरे दोस्त ने कहा: मेरा भी छोटा सा परिवार है। पत्नी, दो बच्चे और माँ-बाप है। हम अपने माँ बाप के साथ रहते हैं। गौर कीजिये दोनों वाक्यों का अर्थ एक ही है लेकिन दोनों के भावार्थ में फूल और पत्थर का अंतर है।

(श्वेता जैन)

कनिष्ठ सहायक (लेखा)

प्रक्षेत्र कार्यालय, इंदौर

पिता का स्नेह

प्यार का सागर ले आते,
फिर चाहे कुछ ना कह पाते ।
बिन बोले ही समझ जाते,
दुःख के हर कोने में
खड़ा उनको पहले से पाया ।
छोटी सी उंगली पकड़कर
चलना उन्होंने सिखाया ।
जीवन के हर पहलू को
अपने अनुभव से बताया ।
हर उलझन को उन्होंने
अपना दुःख समझ सुलझाया ।
दूर रह कर भी हमेशा
प्यार उन्होंने हम पर बरसाया ।
एक छोटी सी आहट से
मेरा साया पहचाना ।
मेरी हर सिसकियों में
अपनी आंखों को भिगोया
आर्शीवाद उनका हमेशा हमने पाया
हर खुशी को मेरे पहले
उन्होंने जाना,
असमंजस के पलों में
अपना विश्वास दिलाया
उनके इस विश्वास को
अपना आत्म विश्वास बनाया
ऐसे पिता के प्यार से
बड़ा कोई प्यार न पाया ।

(अनूप त्रिपाठी)

सहायक अधिकारी (गुणवत्ता नियंत्रक)
गुणवत्ता नियंत्रक प्रयोगशाला (मध्य)
क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल

ज्ञान

जीवन पथ जटिल है ये, कालचक्र कठिन है ये,
पग पग पे भेद-भाव है, रक्त रंजित पांव हैं,
जन्म से किसी के सर वंश की छांव हैं,
झूठ के रथ पे सवार डाकुओं का गांव हैं,
किसी के पास है छल-कपट,
किसी को रूप का वरदान है,
ये सोच के मत बैठ जा कि ये विधि का विधान है,

बज रहा मृदंग है, ये कहता अंग-अंग है,
कि प्राण अभी शेष है, मान अभी शेष है,
उठा ले ज्ञान के धनुष,
एक कण भी और कुछ मांग मत भगवान से,
ज्ञान की कमान पे लगा दे तू विजय तिलक,
काल के कपाल पे लिख दे तू ये गुलाल से,
“कि रोक सकता है तो कोई रोक के दिखा मुझे,
हक छीनता आया है जो अब छीन के बता मुझे”

ज्ञान के मंच पर सब एक समान हैं,
विधि का विधान पलट दे, वो ब्रह्मास्त्र ज्ञान है,

तो आज से ये ठान ले, ये बात गांठ बांध ले,
कि कर्म के कुरुक्षेत्र में,
ना रूप काम आता है, ना झूठ काम आता है,
सिर्फ ज्ञान ही आपको आपका हक दिलाता है,

(हेमलता वर्मा)

सहायक अधिकारी (बीज)
प्रभारी गुण नियंत्रण प्रयोगशाला,
क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल



पढ़ना क्यों आवश्यक है?

किसी ने कहा था कि पुस्तकें हमारी सबसे अच्छी दोस्त होती हैं। परंतु आजकल के व्यस्त जीवन में हमें पढ़ाई के लिए अतिरिक्त समय निकालना बेहद मुश्किल लगता है। पढ़ाई किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारने में न केवल महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है वरन् पहला कदम भी होती है, पढ़ते रहने का नियम आपको कैसे संपूर्ण बनाता है जानते हैं।

मार्क ट्वेन ने कहा था, “जो नहीं पढ़ता वह कहीं से भी उस व्यक्ति से बेहतर नहीं है जो पढ़ नहीं सकता” निरंतर पढ़ते रहने से हमारे व्यक्तित्व का निरंतर विकास चलता रहता है। मानव का मस्तिष्क सतत कार्यरत होता है उसे हमेशा ज्ञान व जानकारी चाहिए होती है। पढ़ते रहने से हमारे दिमाग का पोषण होता रहता है। हमारे सोचने, समझने का दायरा भी बढ़ता है, निश्चित ही दिमाग नकारात्मक सोच तथा चिन्ताओं से दूर रहता है।

निरंतर ज्ञान अर्जित करना बहुत आवश्यक है, पढ़ने से हमारे ज्ञान की नींव मजबूत होती है जिनके पास ज्ञान होता है उनका व्यक्तित्व भी प्रभावशाली होता है, हमारा मानसिक स्तर सुधरता है। पढ़ने की आदत से हमारे पास ढेर सारी जानकारियां होती है, जिनसे हम किसी दूसरों के भी काम आ सकते हैं।

पढ़ने से हमारी बुद्धि तेज होती है जिस वजह से हम किसी भी परिस्थिति में बिना घबराए निर्णय ले सकते हैं। पढ़ने से हमें बहुत सारी पुरानी संस्कृति व सभ्यताओं के बारे में पता चलता है। हमारी कई समस्याओं का हल कहीं न कहीं किसी किताब में मिल ही जाता है। किताबें हमारी टीचर, मार्गदर्शक होती हैं जिन से हमें प्रेरणा मिलती रहती है।

दार्शनिक स्टीव जॉब्स ने एक बार कहा था कि पढ़ने और सीखने से सफलता मिलती है जबकि जानकारी की कमी आपको छोटा व सीमित रखती है। किसी विषय पर आपकी जानकारी सीमित होगी तो आप किसी सामाजिक स्थिति में स्वयं को अकेला और पिछड़ा हुआ महसूस करेंगे पढ़ने से अनेक विषयों को विस्तृत जानकारी मिलती है। किताबें हमें मानसिक ताकत देती हैं जो अपने जीवन में सफल रहे हैं, वह बताते हैं कि कम से कम एक किताब ने उन्हें जीवन में प्रभावित किया है और उनकी प्रेरणा बनी है।

पढ़ने से अकेलापन खत्म होता है। खासकर लंबे सफर पर अथवा खाली समय में वह हमारी सच्ची साथी होती है। किताबें हमारी ऐसी विश्वसनीय दोस्त हैं जो कभी हमारा साथ नहीं छोड़ती। हमारे साथ कभी धोखा नहीं करतीं। पढ़ने से हमारी यादाश्त सुधरती है, एकाग्रता बढ़ती है जिससे हम चरित्रों और तथ्यों को याद रखने में सफल होते हैं।

पढ़ना मनोरंजन का सबसे सस्ता साधन है। यह इंटरनेट और लाइब्रेरी में भी आसानी से उपलब्ध है। हर विषय पर बात करके लोगों पर आप का अच्छा प्रभाव पड़ता है। किताबें छोटी होती हैं उन्हें कहीं भी ले जा सकते हैं न उन्हें बिजली की जरूरत होती है न उन्हें कोई नुकसान पहुँच सकता है, तो अब आप हर हफ्ते या पन्द्रह दिनों में एक किताब पढ़ने का नियम बना लें। यह व्यक्तिगत पंसद है कि हम उपन्यास पढ़ें या एजुकेशनल, रहस्यपूर्ण सस्पेंस थ्रिलर या साइंस फिक्शन या इतिहास अपने व्यक्तित्व को निखारने वाली किताबें या स्वास्थ्य संबंधी किताबें पढ़ कर अपने मस्तिष्क का विकास करें। पढ़ने से हमारा स्वास्थ्य भी सुधरता है। सोने से पहले कुछ देर पढ़ने से दिन भर की चिन्ताओं से छुटकारा मिलता है, इसलिए ज्ञान अर्जित करते रहें। पढ़ते रहें, बढ़ते रहें।

(प्रेम चन्द)

अपर महा प्रबंधक (गुण नियंत्रण)

मुख्यालय

आप भी हंसिये

एक माँ अपने 06 साल के बच्चे का फोटो खिंचवाने के लिए फोटो-स्टूडियो लेकर गई,
फोटोग्राफर बच्चे को पुचकारते हुए बोला- बेटा, मेरी तरफ देखो

इस कैमरे से अभी कबूतर निकलेगा।

बच्चा बोला:- फोकस एडजस्ट कर, जाहिलों जैसी बातें मत कर, पोर्ट्रेट मोड यूज करना,
मैक्रो के साथ, आईएसओ 200 के अंदर रखना। High resolution में चपब आनी चाहिए.....

फेसबुक पे अपलोड करनी है, वरना पैसे नहीं मिलेंगे

साला, कबूतर निकलेगा.....!

तेरे बाप ने कबूतर डाला था कैमरे में...?

फोटोग्राफर बेहोश।



लड़का लड़की होटल में गए।

वेटर:- मेम आप क्या लेगी???

लड़की:- मिर्च वाला घेवर.....!

वेटर:- क्या ...???

लड़की:- मिर्च वाला घेवर!

वेटर:- ????

लड़का:- अरे भाई गॉव की हैं ...!!!!!! तु टेंशन मत ले

पिज्जा मांग रही हैं ...!!!!!!



एक बार फिर पप्पू बोर्ड की परीक्षा में टॉप करते-करते बचा।

प्रश्न- नाईन (nine) किसे कहते हैं

पप्पू- नाई की लुगाई को नाईन कहते हैं।।

“Nine” is the wife of नाई,

She goes door to door देवे बुलावा ।।



एक कंजूस अपने बेटे को पीट रहा था!

पड़ोसी: क्यों पीट रहे हो बच्चे को?

बनिया: मैंने इसको कहा कि 1-1 सीढ़ी

छोड़कर चढ़, चप्पल कम घिसेगी....!

नालायक 2-2 सीढ़ी छोड़कर चढ़ा,

पाजामा फाड़ लिया...!



बुलन्द हौसले

सोचती हूँ जिसे अगर मैं, वो तुरंत मिलता नहीं,
मेहनत करूँ मैं मगर तो दूर मुझसे रह सकता नहीं ।।

अनजान थी खुद से मैं, कौन हूँ मैं होता था बस यही एक सवाल,
बिना जबाब के न जाने क्यों, दिल रहता था यूँ ही बेकरार,
जान पाना यूँ खुद को था कोई आसान नहीं
हार मान लूँ मैं भी यूँ ही, था ये मेरे बस का काम नहीं ।।

परिवार और अपनों से मिली समाज की परंपराओं को जाना,
हर किसी ने कहा लड़की हो तुम छोड़ अपनों को,
किसी और के घर ही हैं तुमको जाना,
जिम्मेदारी हो तुम सिर्फ माँ-बाप और परिवार की,
लड़की की शादी करके विदा करना ही परंपरा हैं समाज की,
निकलों अपने ख्याबों से तुम, ये घर अपना नहीं बेगाना है,
छोड़ तुमको सब कुछ यहीं पर एक दिन यहाँ से जाना हैं ।।

लगा एक अजीब सा सदमा, क्यों नहीं मेरा घर अपना,
जन्म देने वालों को अगर छोड़ना ही हकीकत है,
इसके लिए फिर क्यों किसी की दुल्हन बनने की जरूरत हैं,
है शादी अगर समाज की परम्परा तो,
मौत इंसानी जीवन की सबसे बड़ी असलियत हैं,
यदि छूटना हैं सब कुछ अपना फिर क्यों न कुछ ऐसा कर जाऊँ
बेगानी होकर भी सबकी मैं, सबको अपना बना जाऊँ ।।

नहीं कर सकती अगर उन जन्म देने वालों की उम्र भर सेवा,
तो क्यों न करूँ फिर मैं पूरे समाज की सेवा,
हूँ अगर परायी मैं अपने जन्मदाताओं की,
तो नहीं जरूरत हैं मुझको फिर, समाज के परम्पराओं की दुहाई की,
समाज की पुरानी लकीर की फकीर मैं ना बना पाऊँगी ।

तोड़ के समाज की जंजीरों को, मैं अपनी अलग पहचान बनाऊँगी,
दूर कर दें जो अपनों से ऐसी खोखली परंपरा मुझे मंजूर नहीं,
तोड़ दे मेरे बुलन्द हौसलों को अब इन झूठी रस्मों में इतना दम नहीं ।।

(पूजा शर्मा)

डाटा इन्ट्री ऑपरेटर
मुख्यालय



गुणकारी घरेलू औषधियाँ

1. पथरी का इलाज घरेलू नुस्खे से करना हो तो पथरचट्टा का 01 पत्ता और 04 दाने मिश्री पीस कर 01 गिलास पानी के साथ खाली पेट पिए।
2. 2 ग्राम मिश्री 01 ग्राम सूखा धनिया और 01 ग्राम सरपगंधा पीस कर पानी के साथ लेने से हाई ब्लड प्रेशर कंट्रोल होता है।
3. अगर आप को शूगर बढ़ने की बीमारी है तो सुबह-सुबह खाली पेट करेले का जूस पिये। जूस बनाने से पहले करेले के बीज निकाल दें। जूस निकलने के बाद इसमें थोड़ा पानी मिलाये और पीये। इस उपाय को 02 महीने तक लगातार करें आपकी शूगर कंट्रोल में रहेगी।
4. शरीर में खून की कमी पूरी करने के लिए 01 गिलास मीठे दूध में 05 ग्राम बेल गिरी चूरन मिला कर पिये। कुछ दिन लगातार इस उपाय को करने से खून की कमी दूर होने लगती है।
5. सर्दी जुकाम की समस्या में नाक बंद होने लगे तो थोड़ी सी अजवाइन पीस कर किसी पतले कपड़े में बांध लें और थोड़ी-थोड़ी देर में इसे सूँघे। इससे नाक खुल जाएगी।
6. अगर किसी को लकवे का अटैक पड़े तो तुरंत 50 से 100 ग्राम तिल का तेल गुनगुना कर के पिला दें और कच्चा लहसुन चबाने को दें।
7. मसूड़ों में दर्द, दांत दर्द और सूजन की समस्या का उपचार करने के लिए 01 ग्लास पानी में 03 से 04 पत्ते अमरूद के उबाल लें और हल्का गुनगुना होने पर छान लें। अब इस पानी में थोड़ा नमक मिलाकर कुल्ला करें, दांतों और मसूड़ों के दर्द से छुटकारा मिलेगा।
8. 01 गिलास पानी में थोड़ी सी गिलोय और 05 से 6 तुलसी पत्ते डाल कर उबाल लें और काढ़ा बना कर पिये। इस काढ़े में पपीते के 03 से 4 पत्तों का रस मिलाकर पीने से प्लेटलेट की मात्रा तेजी से बढ़ती है। ये आयुर्वेदिक दवा स्वाइन फ्लू, डेंगू और चिकनगुनिया में रामबाण उपचार का काम करती है।
9. सर्दियों में होने वाले रोगों से बचने और स्वस्थ रहने के लिए जरूरी है कि खान-पान का ध्यान रखा जाये। सर्दियों के मौसम में काली मिर्च, अदरक, लहसुन, तिल, केसर और गुड़ जैसी चीजे खाना चाहिए। ठंड में विटामिन सी के लिए संतरा, अमरूद और नीबू का सेवन करें।
10. गले में टॉन्सिल और छाले होने पर आधा लीटर पानी में 20 ग्राम मेथी दाना डालकर धीमी आँच पर पकाए और पानी को अच्छी तरह उबलने दें। पानी ठंडा होने पर इसे छान लें फिर इसमें नमक डाल कर 5 से 10 मिनट तक गरारे करें। इस उपाय को दिन में 2-3 बार करने पर टॉन्सिल्स से होने वाला दर्द कम होने लगेगा।
11. घुटनों और जोड़ों के दर्द का इलाज करने के लिए अश्वगंधा, शतावरी का चूरन और आमलकी को अच्छे से मिला लें और रोजाना सुबह पानी के साथ लें। इससे दर्द ठीक होगा और जोड़ों को मजबूती मिलेगी। अगर गठिया की शिकायत हो तो इस उपाय से वो भी ठीक होता है। लहसुन के तेल में अजवाइन और हींग मिलाकर पका लें और जोड़ों की मालिश करें तो जोड़ों और घुटनों का दर्द दूर होता है।
12. लीवर की सूजन और कमजोरी दूर करने के लिए हर रोज सुबह शाम 01 गिलास पानी में 01 चम्मच शहद और 01 चम्मच सेब का सिरका मिलाकर पिये। लीवर को ताकत देने और गर्मी दूर करने का ये रामबाण उपाय है।



ठंडाई के लाभकारी नुस्खे

1. ठंडाई अम्लपित्त, पेट को गर्मी व जलन, मुंह के छाले, पेट का अल्सर, रक्त प्रदर, श्वेत प्रदर, लू, डायरिया, उल्टी, हैजा में अत्यधिक लाभकारी है।
2. आंतों को मदद कर कब्ज दूर करने और कफ में आराम देती है। शरीर में बढे हुए पित्त प्रकोप को शांत कर सेक्स संबंधित समस्याओं में लाभकारी है।
3. यह दिमाग को शक्ति, ताजगी और शीतलता प्रदान कर रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है। इसके साथ ही हृदय को बल देने वाली भी होती है।
4. मानसिक रूप से सक्रिय रहने, एकाग्रता और ध्यान बढ़ाने में भी यह फायदेमंद है। गर्मी में इसके सेवन से कठिन कार्य को समझना आसान होता है।
5. पेट में अल्सर होने या दर्द रहने के दौरान एक गिलास ठंडाई पीकर देखें। दिन में तीन से चार बार दूध की लस्सी में इसे डालकर पीने से भी लाभ होगा।
6. जो लोग शीतल प्रकृति के होते हैं, उन्हें सुबह में इसका प्रयोग नहीं करना चाहिए। जुकाम में भी सेवन न करें। ऐसे में आप दोपहर में इसे पी सकते हैं।
7. गर्मी में लू से बचने के लिए ठंडाई का सेवन करें। मस्तिष्क की स्मरण शक्ति को बढ़ाने के लिए कुछ विद्वान ठंडाई में सफेद चंदन का बुरादा, कमलगट्टा, कच्ची खांड, तगर, ब्राह्मी, कासनी और मुलेठी डालने की वकालत करते हैं।
8. संक्रमण के कारण कई बार पेशाब में जलन महसूस होती है। दवाइयों की बजाय ठंडाई का सेवन प्रति दिन करने से यह समस्या दूर हो जाती है।
9. कुछ लोग मुंह में छाले से परेशान रहते हैं। जब छालों से परेशान हों, तो ठंडाई का सेवन करने से छाले एक-दो दिन में ठीक हो जाते हैं।
10. यह कई रोगों के लिए रामबाण दवा है। कोल्ड ड्रिंक पीना चाहते हैं, तो सॉफ्ट ड्रिंक पीने की बजाय ठंडाई का सेवन करें। शरीर को लाभ अधिक होगा।
11. गर्मी में इसे पीना अमृत से कम नहीं माना गया है। यह गर्मी के प्रकोप को दूर करने के साथ-साथ शरीर को तुरंत शक्ति प्रदान करने वाला पेय है।
12. यदि आपको नींद नहीं आती या लगातार सिर दर्द की समस्या बनी रहती है, तो प्रतिदिन ठंडाई पीने से लाभ होगा। ठंडाई अच्छी क्वालिटी की ही पिएं।
13. गर्मी में लू, डायरिया, उल्टी, दस्त, डिहाइड्रेशन आदि की समस्याओं से लोगों को दो-चार होना पड़ता है। इन तमाम समस्याओं से ठंडाई छुटकारा दिलाती है।
14. बादाम, केसर, पिस्ता, सौंफ, खसखस, तरबूज के बीज, हरी इलायची, काली मिर्च दिमाग को तरोताजा रखते हैं। यह पेय काफी पौष्टिक होता है।
15. सुबह घर से बाहर निकलने के पहले एक गिलास ठंडाई पीने से आप दिन भर फिट रहते हैं। इससे दिन भर भागदौड़ करने की एनर्जी भी मिलती है।

क्या कयामत है

जो खेले थे बचपन में साथ-साथ
वो सभी दोस्त अब थकने लगे हैं
किसी का पेट निकल आया है
किसी के बाल पकने लगे हैं
क्या कयामत है उफ़
सभी दोस्त अब थकने लगे हैं।

सभी पर भारी जिम्मेदारी है
छोटी मोटी सभी को बीमारी है
जो भागते दौड़ते थे दिन भर
अब वो भी रुकने लगे हैं
क्या कयामत है उफ़
सभी दोस्त अब थकने लगे हैं

किसी को लोन की फ्रिक है
कहीं हैल्थ टेस्ट का जिक्र है
ऑखों में सभी के अजीब सी नमी है
फुर्सत की सभी को कमी है
कल जो प्यार के खत लिखते थे
आज बीमा फार्म को देखने लगे हैं
क्या कयामत है उफ़
सभी दोस्त अब थकने लगे हैं।

पुरानी तस्वीर देखकर अब
जी भर आता है दोस्तों
क्या अजीब शै है ये वक्त भी
किस तरह से गुजर जाता है।
कल का जवान दोस्त भी।
आज अधेड़ नजर आता है
कल के ख्वाब सजाते थे जो दोस्त
अब गुजरे दिनों में खोने लगे हैं
उफ़ क्या कयामत है।
मेरे दोस्त अब थकने लगे है।
मेरे दोस्त अब थकने लगे है।

(बिमला चौहान)
निजी सचिव, मुख्यालय

दर्पण की खूबी

वो छूते हैं मुझे तो और निखर जाता हूँ
इतना टूटा हूँ कि छूने से बिखर जाता हूँ।
पूछा किसी ने रात में कहाँ खो जाता हूँ,
कोई अपना बिछड़ा हुआ मिल जाए बस,
इसी तलाश में निकल जाता हूँ।

अंधेरे में कहाँ किसी से मिल पाता हूँ
वो छूते हैं मुझे तो और निखर जाता हूँ
इतना टूटा हूँ कि छूने से बिखर जाता हूँ।
जीने की इच्छा तो तभी खत्म हो गई थी,
जब हम दुनिया में आए थे।

चमक, चटक और खटक तो हम अपने साथ ही लाए थे,

सच्चा चेहरा सबको दिखलाता हूँ।

वो छूते हैं मुझे तो और निखर जाता हूँ।
इतना टूटा हूँ कि छूने से बिखर जाता हूँ।

नेक काम कुछ करके देखो औरों के लिए जीकर देखो,
पीड़ा क्या होती है, मेरी तरह टूट कर देखो।

सन्देश यह घर-घर पहुँचाता हूँ,

इतना टूटा हूँ कि छूने से बिखर जाता हूँ।।

कई बार टूटा, कई बार जुड़ा, जब देखा अपना ही
मुखड़ा,

एक होकर भी अनेक नजर आता हूँ।

छोटा सा है नाम मेरा बस दर्पण कहलाता हूँ।

वो छूते हैं मुझे तो और निखर जाता हूँ
इतना टूटा हूँ कि छूने से बिखर जाता हूँ।

(प्रेम सिंह चन्देलिया)
कार्यालय परिसर, मुख्यालय



बुढ़ापा एक वरदान

आप शीर्षक पढ़कर चौक गये होंगे लेकिन सच्चाई यही है कि बुढ़ापा भगवान का एक वरदान है। जो मनुष्य बुढ़ापे का आनंद लिए बिना ही दुनिया से चला गया, उसका जीवन ना केवल अधूरा रहा बल्कि वह जीवन की सच्चाई का अनुभव किए बिना ही, गलत फहमी में, इस रंगमंच से चला गया।

आमतौर पर यदि किसी बूढ़े व्यक्ति से पूछा जाए कि तारु क्या हाल है तो वे अपना दुखड़ा रोने लगते हैं कि.... क्या हाल होगा बुढ़ापे में, बेटा बुढ़ापा तो खुद में ही एक रोग है, शरीर साथ नहीं देता, आँखों से दिखता नहीं है, चला फिरा जाता नहीं, खाया पिया हजम नहीं होता, कोई बात नहीं मानता सब अपनी मनमर्जी चलाते हैं, किसी को बूढ़े आदमी के पास बैठने की फुरसत नहीं, अब तो भगवान उठा ले.... आदि कह कर दुखी होता है तथा दूसरों को भी दुखी करता है। यह दुआ बुढ़ापे को सांसारिक व मोह ममता वाले नजरिया से देखने का परिणाम।

इसी बुढ़ापे का दूसरे नजरिये से देखें तो.....

बुढ़ापा आने तक मनुष्य अपनी जिम्मेवारियों को पूरा कर चुका होता है। बच्चे बड़े हो चुके होते हैं, उनकी शादी विवाह व परिवार हो चुका होता है, वह अपने व्यवसाय/नौकरी व परिवार के पालन-पोषण में मगन हो जाते हैं। अब परिवार वाले ना तो बूढ़े व्यक्ति से सलाह लेते हैं और ना मदद की उम्मीद रखते हैं, यानि परिवार की जिम्मेवारी खत्म, आप पूरे फुरसत में, मन चाहे तो घर के छोटे-मोटे काम में सहयोग कर दें ना मन करें तो ना करें, मन करें तो सामाजिक काम करें, जब तक मन करें एकांत में बैठ कर भगवान का स्मरण करें, थक जाये तो सो जाए। कोई जिम्मेदारी नहीं, पूरे मस्त मलंग, अब आपके व भगवान के बीच में कोई बाधा नहीं ना नौकरी, ना व्यवसाय, ना पहले चली गयी तो उसकी भी चिंता समाप्त। देखो भाई इस रंगमंच से जाना तो सभी को है, सदा कोई नहीं रहा। जब जीना निश्चित है और जहाँ जिसके पास जाना है उससे संबंध प्रगाढ़ करने का सबसे अच्छा मौका, परिस्थिति बुढ़ापे में ही मिल सकती है। तो बुढ़ापे में हो गई ना मौज।

भगवान अपने भक्त का अहंकार व वहम समाप्त कर उसे शुद्ध बनाते हैं, इसलिए बुढ़ापे में परिवार से तिरस्कार करवाकर परिवार की असलियत दिखाकर मोह ममता से छुटकारा दिलाते हैं, पद प्रतिष्ठा समाप्त कर उसका घंमड दूर करते हैं तथा शरीर कमजोर व कुरूप बनाकर बल व सुन्दरता का अहंकार मिटाकर संदेश देते हैं कि अब सच्चाई अनुभव कर ली अब तो मेरे चिन्तन, मनन में लग जाओ। तो बुढ़ापे में हुई ना भगवान की कृपा।

इसी प्रकार भगवान, आँखों की रोशनी व सुनने की क्षमता कम करके संदेश देते हैं कि अब ज्यादा संसार को देखने व सुनने की जरूरत नहीं। दाँत गिराकर व पाचन क्रिया कम करके बताते हैं कि ज्यादा सख्त व गरिष्ठ भोजन की शरीर को आवश्यकता नहीं है अब तो काम चलाऊ व पचने योग्य चीजें खाकर संतुष्ट रहो, शरीर शिथिल करके संदेश देते हैं कि अब और भटकने की जरूरत नहीं, शांत भाव से एक ही स्थान पर रहकर प्रभु स्मरण करते हुए इस रंगमंच से जाने की तैयारी करो। इस प्रकार भगवान बुढ़ापे में सभी परिस्थितियां कल्याणकारी बनाकर मनुष्य को अपना जीवन सफल बनाने में पूरी मदद करते हैं। भगवान हम पर दया करके बुढ़ापा देते हैं कि यह मनुष्य जीवन भर दुनियादारी में फंसा रहा अब तो इसका कल्याण हो जाए। भगवान हमें बुढ़ापा देकर हम सभी पर कितनी दया करते हैं। वास्तव में बुढ़ापा भगवान का बहुत बड़ा वरदान है।

हम सभी को अब बुढ़ापे से डरना नहीं है, दुखी नहीं होना है बल्कि प्रभु के संदेशों को समझकर, उसके अनुरूप अपनी सोच बनाकर बुढ़ापे का आनंद लेते हुए इस रंगमंच से जाना है। हम सभी का बुढ़ापा आनंदमय एवं कल्याणकारी होगा इससे कोई शक नहीं है।

आई.पी. सिंह

सहायक अधिकारी (मा.सं.)
केन्द्रीय राज्य फार्म, हिसार

लोभ सकल व्याधिन कर मूला

परम आदरणीय गोस्वामी तुलसी दास जी ने राम चरित मानस में लिखा है कि— मोह सकल व्याधिन कर मूला । लेकिन जब एक व्यक्ति ने, कोर्ट परिसर में अपनी पेशी का इंतजार करते समय, अपनी आप बीती बताई तो मुझे लगा कि गोस्वामी जी को यह भी लिखना चाहिए कि – **लोभ सकल व्याधिन कर मूला ।**

हुआ यह कि, वह व्यक्ति रेलगाड़ी से परिवार सहित हरिद्वार जा रहा था। श्रीगंगानगर रेलवे स्टेशन पर दो मजबूत कद—काठी के व्यक्ति एक बड़ा बक्सा लेकर उस डिब्बे में चढ़े और उन्होंने वह बक्सा उस व्यक्ति के पास ही सैट कर दिया। कुछ देर बैठने के बाद उन्होंने उस व्यक्ति को कहा कि आप मेरे बक्से का ख्याल रखना हम नीचे पानी पीकर आते हैं। काफी देर तक वे नहीं आए और गाड़ी रवाना हो गई। कई स्टेशन निकल गए वे दोनों नहीं आए तो उस व्यक्ति के मन में आया कि शायद वे वहीं स्टेशन पर ही छूट गए। यह बक्सा काफी भारी है, गलत इसमें काफी माल है। अगर हरिद्वार तक नहीं आए तो मैं इस बक्से को उतारकर अपने साथ ले जाऊँगा और यही हुआ वे नहीं आए, उस व्यक्ति ने स्टेशन पर कुली की मदद से वह बक्सा उतार लिया। बक्सा काफी भारी था, इस पर कुली को शक हुआ उसने जी.आर.पी को इसकी सूचना दे दी।

जी.आर.पी वाले आए और उन्होंने उस व्यक्ति से पूछा कि यह बक्सा आपका है, उसने कहा हाँ मेरा है। पुलिस वालों ने उसको चैक करने के लिए चाबी माँगी, तो उसने चाबी ढूँढने का नाटक किया और कहा कि चाबी कहीं गिर गई। पुलिस का शक और बढ़ गया, उन्होंने बक्से का ताला तोड़ा तो उसमें एक व्यक्ति की लाश मिली। अब तो उस व्यक्ति की हालत देखने लायक हो गई। वह बार—बार कहने लगा कि यह बक्सा मेरा नहीं, इसे तो दो व्यक्ति डिब्बे में छोड़कर उतर गए लेकिन पुलिस वालों ने उसकी बात पर विश्वास नहीं किया क्योंकि कुछ देर पहले तक तो वह उस बक्से को अपना बता रहा था। उसे परिवार सहित गिरफ्तार कर लिया गया, सिविल पुलिस के हवाले कर दिया गया। कई महीनों में काफी पैसा खर्च करने के बाद जमानत हुई तथा तीन साल हो गए अभी तक कोर्ट में पेशी भुगत रहा है।

वह व्यक्ति उस क्षण को कोस रहा था जब उसके मन में उस बक्से को अपना बताकर अपने घर ले जाने का लोभ पैदा हुआ। अगर वह लालच ना करता और अपनी हक—हलाल की कमाई पर ही संतुष्ट रहता तो इन व्याधियों से बच जाता। तभी मेरे मन में आया कि – **लोभ सकल व्याधिन कर मूला** वाली बात सिद्ध हो रही है। सच ही है कि व्यक्ति पहले अंदर से चोर बनता है बाद में चोरी को अंजाम देता है। मन के गंदे विचार ही बुरे कार्य करवा देते हैं जिसके कारण मनुष्य नाना प्रकार के दुख भोगता है। जब लोभ मन में आता है तो उसके वशीभूत होकर मनुष्य कितना अनैतिक कार्य कर सकता है, इसका अंदाजा लगाना भी मुश्किल है।

आई.पी. सिंह

सहायक अधिकारी (मा.सं.)
केन्द्रीय राज्य फार्म, हिसार



तरक्की के लिए कुछ महत्वपूर्ण बातें

अपने विचारों को सकारात्मक रखे क्योंकि आपके विचार ही आपके शब्द बनते हैं, अपने शब्दों को सकारात्मक रखें क्योंकि आपके शब्द ही आपका स्वभाव बनते हैं, अपने स्वभाव को सकारात्मक रखें क्योंकि आपका स्वभाव ही आपकी आदत बनता है। अपनी आदतों को सकारात्मक रखे क्योंकि आपकी आदतें ही आपके गुण बनते हैं। अपने गुणों को सकारात्मक रखें क्योंकि आपके गुण ही आपकी किस्मत निर्धारित करते हैं। — महात्मा गांधी

- दिन की शुरुआत Happy –दिन की Happy शुरुवात कैसी होगी इस की कोशिश करो। बहुत बार छोटी बातों से मुड़ खराब हो जाता है और हम कुछ नहीं करते, सिर्फ चिड़चिड़ होती है इसलिए सुबह उठने के बाद पोजेटिव ऊर्जा के साथ शुरुवात करो।
- खुद पर भरोसा रखो (Self Confidence)– बहुत बार यहाँ पर ही Problem होती है, सब कुछ है इसलिए जरा खुद पर भरोसा रखकर, खुद पर ही प्रेम करो।
- समय के महत्व को समझे। गलत कामों में अपने कीमती समय को व्यर्थ न गंवायें, आपके पास जितना भी समय बचा है, उसे अच्छे कामों में खर्च कीजिए और अच्छे लोगों के लिए खर्च कीजिए।
- कॅरेक्टर संभालों (Character)– एक रात में किसी का कॅरेक्टर तैयार नहीं होता। बहुत बार कुछ लोगों के बारे में हमें कुछ अलग ही लगता है पर वो अलग ही होते हैं। इसलिए हमारी रेप्युटेशन क्या बन रही है इसकी तरफ ध्यान दो। एक बार कॅरेक्टर पर छिंटे उड़ें तो उसे मिटाना बड़ा मुश्किल होता है।
- जीने का मकसद (Aims)– खुद को पूछो हम किस लिए जी रहे हैं। अपना लक्ष्य क्या है? जीना बहुत सुंदर है। ये मानों, ऐसा कहते हैं कि कुछ करके असफलता मिलना ये कुछ नहीं करने से कभी अच्छा है। इसलिए हमारे जीने का मकसद ढूँढो।
- जो करोगे वो अच्छे से करो–भूल जाओ कि आपका मुकाबला किसके साथ है, जो करोगे वो अच्छे से करो। पहली बार ऐसा कुछ करो कि वो अच्छा ही होना चाहिए और महत्वपूर्ण, मतलब जो किया वो किया, उससे भी कुछ खास करने की तैयारी करो।
- शिकायत मत करो–अगर हम सवाल सुलझाने को तैयार नहीं होते तो हम भी उस सवाल का हिस्सा बन जाते हैं। खुद ही Problem हो जाती है इसलिए हमेशा शिकायत करना छोड़िए, जो आगे आएगा उसे स्वीकार करो और उस हिसाब से काम करो।
- थोड़ा सा ज्यादा – लोग की अपेक्षा से ज्यादा कुछ करने की, ज्यादा कोशिश करके थोड़ा ज्यादा काम करने की तैयारी रखो। आपको दिए गए काम से कुछ एक्सट्रा करने का सोचो।
- भूमिका लो – जैसी हवा आई तो पीठ धुमाई तो आप लहर के साथ बह के जाओगे। उसके अलावा निष्ठा रखो, भूमिका लो और उस पर डटे रहो।
- फोकस– आपका लक्ष्य क्या है, आपको Exactly क्या चाहिए, ये मत भूलो। कुछ भी हो जाए अपना ध्यान मत हटाओ।
- हर एक की अच्छी आदतों को उनकी महानता को देखने की कोशिश करें। दूसरों की कमियों को ढूँढना बंद करे। अपने दिल पर हाथ रखें और अपनी कमियों के बारे में जाने। अपने दिल में आपको बहुत सी नकारात्मकता और कमियां मिलेगी।

कुलदीप सिंह

सहायक (मा.सं.)

केन्द्रीय राज्य फार्म, ज्वालगेरा

कृषि दर्शन कार्यक्रम में निगम की उपस्थिति

आकाशवाणी दिल्ली के कृषि दर्शन कार्यालय में निगम की विभिन्न कार्यकलापों के बारे में समय-समय पर निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के साथ हुए बातचीत के अंश प्रसारित होते रहते हैं, जिनमें निगम की विभिन्न गतिविधियों के बारे में तथा किसानों को बीज उपलब्धता में होने वाली परेशानियों पर भी चर्चा होती है। इनमें से हाल ही में प्रसारित कुछ कार्यक्रम, जो यू-ट्यूब पर भी उपलब्ध है, निम्न प्रकार हैं:-

1. दिनांक 2.12.2016 कृषि दर्शन कार्यक्रम में माननीय अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक द्वारा किसानों की समस्याओं से संबंधित जानकारी दी गई तथा किसानों को बीज खरीदते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए, इसकी भी जानकारी दी गई।
2. दिनांक 08.02.2017 को प्रसारित "खबरे खेती की" कार्यक्रम में माननीय अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने किसानों को रबी की फसल की उत्पादकता बढ़ाने के तरीकों की जानकारी दी।

3. दिनांक 15.02.2017 को प्रसारित "खबरे खेती की" कार्यक्रम के तहत किसानों को धुरी सिंचाई पद्धति (pivotal Irrigation System) जो कि एक आधुनिक सिंचाई पद्धति है, के बारे में जानकारी दी गई।



4. दिनांक 27.02.2017 को "खबरे खेती की" कार्यक्रम में माननीय कृषि मंत्री श्री राधा मोहन सिंह एवं निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री विनोद कुमार गौड़ के साक्षात्कार का प्रसारण किया गया जो निगम द्वारा कृषि भवन, नई दिल्ली में निगम के प्रथम खाद्य बिक्री केन्द्र के उद्घाटन के समय लिया गया था। उक्त साक्षात्कार में माननीय कृषि मंत्री ने निगम द्वारा मूल्य संवर्धन कार्यक्रम के अंतर्गत किए जा रहे प्रयासों की सराहना की तथा कृषि क्षेत्र में निगम के योगदान का उल्लेख किया। ज्ञातव्य है कि निगम ने हाल ही में मूल्य संवर्धन कार्यक्रम के तहत परीक्षण में फेल हुए बीजों को खाद्य पदार्थ के रूप में उपलब्ध कराने का निर्णय लिया था जिसके अंतर्गत प्रारंभिक तौर पर बासमती चावल तथा आटे की बिक्री शुरू की गई थी। "फार्म सोना" ब्रांड के तहत अब इसमें चना तथा अन्य पदार्थों का भी विक्रय किया जा रहा है। साथ ही बिक्री केन्द्रों की संख्या में भी विस्तार किया जा रहा है।



5. दिनांक 01.03.2017 दूरदर्शन समाचार कार्यक्रम में निगम के माननीय अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने निगम की विभिन्न गतिविधियों के साथ साथ निगम के फार्मों पर उत्पादित पौधशाला (नर्सरी) से संबंधित विस्तृत जानकारी दी।



सफलता के शोपान

जीवन को सभी सफल बनाना चाहते हैं। आखिर मुनष्य केवल खाने के लिए नहीं जीता है। उसके सामने कुछ लक्ष्य होता है। प्रत्येक व्यक्ति जीवन में कुछ ऐसा करना चाहता है कि उसके कार्य की सराहना हो। उसकी समाज तथा राष्ट्र में प्रतिष्ठा हो। इसके लिए जीवन में महत्वपूर्ण कार्यों को करना पड़ता है। जिन अनेक छोटे-छोटे कार्यों को हम महत्वपूर्ण नहीं समझते हैं। यदि उन पर ध्यान दें तो जीवन में सफलता अवश्य प्राप्त हो सकती है। सफलता पाने के लिए निम्न सूत्रों को अपनाने से जीवन में सफलता के शिखर पर पहुंचा जा सकता है—

जीवन का उद्देश्य निर्धारित कीजिए— बिना उद्देश्य के जीवन का कोई महत्व नहीं होता है और वह ऐसी ही है जैसे बिना पतवार के नाव। मनुष्य को जीवन यो ही जीवन जीने के लिए नहीं मिला है। जीवन में कुछ ऐसा विशेष कार्य करें ताकि उसके कार्यों की प्रशंसा हो। अपने जीवन का उद्देश्य एवं लक्ष्य प्राप्त होने पर निश्चित ही प्रसन्नता की अनुभूति होगी।

कर्तव्यपरायण बनिए— हमारा किसके प्रति क्या कर्तव्य है? यह समझना अति आवश्यक है। कर्तव्यपरायण व्यक्ति अपने आचरण से अपनी जिम्मेदारी पूर्ण करके एक आदर्श प्रस्तुत कर सकता है। माता-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी, बच्चों, मित्रों, परिवार, समाज तथा राष्ट्र के प्रति क्या कर्तव्य है। यह न केवल जाने, अपितु उस पर आचरण करें।

संतोषी बनिए— जिसके जीवन में संतोष नहीं है। उसका जीवन भी क्या जीवन है। प्रायः लोगों में दूसरों की उन्नति देखकर मन में ईर्ष्या भावना संपन्न होती है। इसका परित्याग कर हमें दूसरों की उन्नति से प्रेरणा लेकर उन्हींसे उन्नति कैसे की। इसका विश्लेषण करना चाहिए। सत्प्रयास से जो प्राप्त हो, उसे प्रभुकृपा समझकर पूर्ण संतोष करना चाहिए।

आवश्यकताएं कम कीजिए— दूसरों की देखा-देखी अपनी आवश्यकताएं बढ़ाकर वस्तुओं का संग्रह करना, अपनी आय से अधिक खर्च करना क्या उचित है? हमें ध्यान रखना चाहिए कि जितनी हमारी आवश्यकताएं कम होंगी, उतनी ही चिंता कम होगी और जीवन में तनाव कम होगा।

सकारात्मक सोच रखिए— जीवन में सकारात्मक सोच रखकर ही अपने जीवन को सार्थक, प्रसन्न और मधुर बनाया जा सकता है। सफलता के शिखर पर पहुँचने के लिए सकारात्मक सोच बहुत आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति की बात को अच्छे नजरिए से सुनना तथा अपने कार्यों को सही तरीके से उत्साहपूर्वक करना ही सकारात्मक सोच है। नौकरी करके भी व्यक्ति अपने क्षेत्र में सफलता के शिखर पर पहुँच सकता है तो कोई व्यापार में भी सफल होता है तो कोई सफल नहीं होता। व्यापार में प्रतिस्पर्धा एवं अधिक लाभ कमाने की लालसा से प्रायः असंतोष ही रहता है। व्यवहार कुशल एवं सही सकारात्मक सोचवाले व्यक्ति ही अवसर का लाभ उठा सकते हैं और उन्नति करते हैं।

आत्म निरीक्षण कीजिए— आत्मनिरीक्षण करके ही मुनष्य सफल हो सकता है। जिस व्यक्ति ने आत्म निरीक्षण कर लिया, वह क्रोध पर भी नियंत्रण कर सकता है। क्रोध मुनष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। हमें प्रतिदिन थोड़ा समय आत्मनिरीक्षण के लिए देकर यह देखना चाहिए कि आज के दिन मुझे किन कार्यों में सफलता मिली और नहीं मिली तो क्या कारण है? तथा मैंने कौन से अच्छे तथा कौन से गलत कार्य किए? आदि बातों पर आत्मचिंतन करके अपनी भूलों को सुधारना चाहिए।

अहंकार को त्यागें— सफलता के रास्ते में सबसे बड़ी बाधा मनुष्य का अहं या अहंकार होता है। जो मनुष्य यह सोचता है कि मैं सर्वगुण सम्पन्न हूँ और मेरी बात ही शतप्रतिशत सही है, यह भावना उसके अहम को प्रकट करती है। अहम व्यक्ति की प्रतिष्ठा को बढ़ाता नहीं अपितु गिराता है।

समय का सदुपयोग कीजिए— बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता। सफलता प्रत्येक क्षण का सही उपयोग करने वाले व्यक्ति के चरण चूमती है। जो व्यक्ति अपने कार्य को निर्धारित समय में अच्छे ढंग से पूरा करता है, वही

उन्नति करता है। वर्तमान में जो समय मिला है, उसका एक क्षण भी व्यर्थ न जाए, इसका पूरा ध्यान रखने वाले व्यक्ति को निःसंदेह सफलता अवश्य प्राप्त होती है।

अपने वादों को पूरा कीजिए— जिसे वचन दें, उसे अवश्य पूरा करें, चाहे मार्ग में अधिक कठिनाईयाँ आएँ। वचन पालन से व्यक्ति की विश्वसनीयता बढ़ती है।

इस सफलता के सोपान का अनुसरण करने पर निश्चित ही जीवन में सुख—शांति और समृद्धि दायक बनाया जा सकता है।

(श्वेता जैन)

कनिष्ठ सहायक (लेखा)
प्रक्षेत्र कार्यालय, इंदौर

स्वच्छता अभियान

दोस्तों एक काम करें
साफ—सफाई का प्रण करें।
दूसरों को बोलने से पहले
अच्छे से शुरुवात करें।।
आओ दोस्तों एक काम करें.....

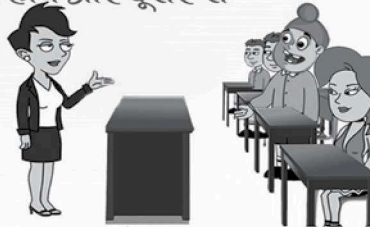
सफाई की इस मुहिम में
अपना योगदान करें।
अपनों के अलावा
आस—पड़ोस को स्वच्छता के लिए प्रेरित करें।।
आओं, दोस्तों एक काम करें.....

स्वच्छता ही अपना उद्देश्य
हम इसका संकल्प करें।।
आओं दोस्तों एक काम करें.....

आनंद कुमार रावत
सहायक अधिकारी (वित्त एवं लेखा),
क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे

कार्टून कोना

अध्यापिका: उसने कपड़े धोए और उसे
कपड़े धोने पड़े!
इन दोनों वाक्यों में अंतर बताओ?
पप्पू: सर, पहले वाक्य से व्यक्ति के
अविवाहित होने और दूसरे से



उसके विवाहित होने का पता चलता है!

2 मच्छर स्टीडी कर रहे थे।

पहला मच्छर- मैं तो आगे डॉक्टर बनूँगा।

दूसरा मच्छर- मैं तो आगे चलकर इंजीनियर बनूँगा।

इतने में एडमिन ने मॉरटिन जला दिया।

दोनों मच्छर बोले-

साले ने सारा कैरियर खराब कर दिया।

अक्टूबर, 2016 से मार्च, 2017 तक सेवानिवृत्तियां

क्र. सं.	कर्मचारी का नाम श्री / श्रीमती	पदनाम
अक्टूबर, 2016 में सेवानिवृत्त		
1	गोपाल कृष्णा टी.ए.	स. निजी सचिव
2	पी हनुमंथा राव	सहायक प्रबंधक (उत्पादन)
3	राम नाथ दीक्षित	चपरासी सह चौकीदार
4	राम विलास	नियमित कार्यकर्ता ग्रेड-II
5	गणपत	नियमित कार्यकर्ता ग्रेड -II
6	मंगल सिंह	तकनीशियन ग्रेड-II
नवंबर, 2016 में सेवानिवृत्त		
7	जोगिंदर सिंह	बहु उद्देशीय परिचर
8	राम श्रेष्ठ गुप्ता	बहु उद्देशीय परिचर
9	उत्तम टी. गायकवाड	चपरासी सह चौकीदार
10	शिव प्रसाद	नियमित कर्मचारी ग्रेड-III
11	यश पाल	नियमित कार्यकर्ता ग्रेड-II
12	मोती	नियमित कार्यकर्ता ग्रेड-II
13	जोगिंदर	नियमित कार्यकर्ता ग्रेड-II
14	नरेश चंद	लेखा अधिकारी
15	टी.एस.ससी	सहायक निजी सचिव
16	अंबिका के. वर्मा	सहायक अधिकारी (वि. एवं ले.)
17	सिकंदर खान	वाहन चालक ग्रेड-II
18	आर.सी. पात्रा	व. वाहन चालक ग्रेड-III

क्र. सं.	कर्मचारी का नाम श्री / श्रीमती	पदनाम
दिसम्बर, 2016 में सेवानिवृत्त		
19	योगेश जोशी	लेखा अधिकारी
20	कल्लु प्रसाद वर्मा	लेखा अधिकारी
21	सुखबीर सिंह अहलावत	सहायक अधिकारी (बीज)
22	रूप नारायण	प्रबंधक (अभियांत्रिकी)
23	रईस अहमद	प्रबंधक (अभियांत्रिकी)
24	श्याम सुन्दर	चपरासी सह चौकीदार
25	रफीक	नियमित कामगार ग्रेड-III
26	मौजी लाल	नियमित कामगार ग्रेड-II
27	सागीर	नियमित कामगार ग्रेड-II
28	महेश	नियमित कामगार ग्रेड-II
29	शिवजी	नियमित कामगार ग्रेड-II
30	बख्शीश सिंह	नियमित कामगार ग्रेड-II
31	सोहन	नियमित कामगार ग्रेड-II
32	मदन	नियमित कामगार ग्रेड-II
33	राम कुमार	नियमित कामगार ग्रेड-II
34	यू.एस. पाठक	नियमित कामगार ग्रेड-II
35	सुंदर	वरिष्ठ सुरक्षा गार्ड
36	हरी नारायण शुक्ला	तकनीशियन ग्रेड-I
37	राम नरेश सिंह	व. सुरक्षा गार्ड
38	हवा सिंह	नियमित कामगार ग्रेड-II

क्र. सं.	कर्मचारी का नाम श्री / श्रीमती	पदनाम
जनवरी, 2017 में सेवानिवृत्त		
39	चंद्रिका	नियमित कामगार ग्रेड-III
40	राज पाल सिंह	सहायक अधिकारी (बीज)
41	एस. कुमार सेल्वम	उप महाप्रबंधक (अभियांत्रिकी)
42	भौर सिंह	क. अभियंता ग्रेड-III
43	एस.के.गांगुली	प्रबंधक (उत्पादन)
44	डी.पी.यादव	प्रबंधक (उत्पादन)
45	सुरेश रामसाही	बहु उद्देशीय परिचर
46	बेग राज	नियमित कामगार ग्रेड-III
47	अशोक ठाकुर	नियमित कामगार ग्रेड-III
48	राम इकबाल राय	नियमित कामगार ग्रेड-II
49	जय लाल	नियमित कामगार ग्रेड-II
50	श्री राम	नियमित कामगार ग्रेड-II
51	भूट्टन राय	नियमित कामगार ग्रेड-II
52	राम भजन	नियमित कामगार ग्रेड-II
53	दरोगा राम	नियमित कामगार ग्रेड-II
54	चिलंगी	नियमित कामगार ग्रेड-II
55	हीरा लाल	नियमित कामगार ग्रेड-II
फरवरी, 2017 में सेवानिवृत्त		
56	कन्हैया लाल	सहायक (एचआर) ग्रेड-I
57	जगदीश सिंह	सहायक अधिकारी (वि. एवं ले.)

क्र. सं.	कर्मचारी का नाम श्री / श्रीमती	पदनाम
58	ओम प्रकाश	सहायक अधिकारी (बीज)
59	जेपी शारमा	चपरासी सह चौकीदार
60	श्याम राठी	नियमित कामगार ग्रेड-III
61	सुख देव	नियमित कामगार ग्रेड-III
62	राम आज्ञा	नियमित कामगार ग्रेड-III
63	धरम पाल	नियमित कामगार ग्रेड-III
64	रियाजुलख़ाक	नियमित कामगार ग्रेड-II
65	मंगल दास	नियमित कामगार ग्रेड-II
66	हलीम	नियमित कामगार ग्रेड-II
67	रामजी	नियमित कामगार ग्रेड-II
68	राम भरोसे	नियमित कामगार ग्रेड-II
69	सूरज नाथ सिंह	नियमित कामगार ग्रेड-II
70	गुरमेत सिंह	व. तकनीशियन ग्रेड-I
71	छोटा लाल	वाहन चालक ग्रेड-I
72	फक्रुल हसन	वाहन चालक ग्रेड-II
मार्च, 2017 में सेवानिवृत्त		
73	फूल चंद	नियमित कामगार ग्रेड-III
74	छेदी लाल	नियमित कामगार ग्रेड-II
75	श्री किशन	नियमित कामगार ग्रेड-II
76	सुखी यादव	नियमित कामगार ग्रेड-II
77	बी.एस. रवींद्र नाथ	वरिष्ठ सहायक (लेखा)



वर्ष 2016-17 (2015) के दौरान पदोन्नतियाँ

क्र. सं.	कर्मचारी का नाम श्री / श्रीमती	पदनाम
1	सदाशिवाय हीरेमठ	सहायक अधिकारी (गुण नियंत्रण)
2	अनुप त्रिपाठी	सहायक अधिकारी (गुण नियंत्रण)
3	महेंद्र कुमार	सहायक अधिकारी (बीज)
4	बी.एल. कनवारिया	सहायक अधिकारी (बीज)
5	खेम सिंह पाल	सहायक अधिकारी (भंडार)
6	आर एन योगी	सहायक अधिकारी (भंडार)
7	टी नास्कर	सहायक अधिकारी (भंडार)
8	राजेश मवार	सहायक अधिकारी (भंडार)
9	एके तिवारी	सहायक अधिकारी (भंडार)
10	वीरेंद्र सिंह	सहायक अधिकारी (विधि)
11	बिमलेश कुमारी	सहायक निजी सचिव
12	आनन्द कुमार	सहायक निजी सचिव
13	पीके सुर्यवंशी	सहायक निजी सचिव
14	सरला सेठी	सहायक निजी सचिव
15	शैलेंद्र कुमार	उप महाप्रबंधक (मा.सं.)
16	एमएस माथुर	उप महाप्रबंधक (उत्पादन)
17	बी.पी. सिंह	उप महाप्रबंधक (उत्पादन)
18	नीरज	उप महाप्रबंधक (अभियांत्रिकी)
19	अहमद राजा एम	सहायक महा प्रबंधक (उत्पादन)

क्र. सं.	कर्मचारी का नाम श्री / श्रीमती	पदनाम
20	एल.एस. मिश्रा	सहायक महा प्रबंधक (उत्पादन) (फार्म)
21	प्रेम एस मल्खानिया	सहायक महा प्रबंधक (उत्पादन)
22	राजेश कुमार कासवान	सहायक महा प्रबंधक (अभियांत्रिकी) सिविल (फार्म)
23	नीरज भाटिया	वरिष्ठ प्रबंधक (अभियांत्रिकी) कृषि
24	एम बीरैया	सहायक प्रबंधक (मा.सं.)
25	शंकर लाल वैष्णव	सहायक प्रबंधक (मा.सं.)
26	रूप नारायण	प्रबंधक (अभियांत्रिकी) कृषि
27	धर्मेन्द्र कुमार	प्रबंधक (मा.सं.)
28	आशुतोष मिश्रा	प्रबंधक (सतर्कता)
29	पी नवनीत कृष्णन	प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
30	अभिषेक ओझा	प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
31	उमेश मिश्रा	प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
32	एडवर्ड लकड़ा	प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
33	विनोद भाटिया	सहायक प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
34	राजेश कुमार दाधिच	प्रबंधक (उत्पादन)
35	हैमंत चंपत राव चिरमुरकर	प्रबंधक (उत्पादन)
36	एलआर सिंह	प्रबंधक (उत्पादन)
37	रामनिवास यादव	प्रबंधक (उत्पादन)

क्र. सं.	कर्मचारी का नाम श्री / श्रीमती	पदनाम
38	जय प्रकाश	सहायक प्रबंधक (विपणन)
39	प्रशांत शर्मा	सहायक प्रबंधक (विपणन)
40	सचिन पवॉर	सहायक प्रबंधक (उत्पादन)
41	प्रदीप कुमार बिलुग	सहायक प्रबंधक (उत्पादन)
42	श्योराज हदा	सहायक प्रबंधक (उत्पादन)
43	डीवी सिंह	सहायक प्रबंधक (उत्पादन)
44	गुलाब सिंह ओला	सहायक प्रबंधक (उत्पादन)
45	राम गोपाल	सहायक प्रबंधक (उत्पादन)
46	टीए गोविंदा	सहायक प्रबंधक (उत्पादन)
47	जीएन शिंदे	सहायक प्रबंधक (उत्पादन)
48	सुरेन्द्र कुमार यादव	अपर महा प्रबंधक (मा.सं.)
49	अरुण कुमार घिल्डियाल	अपर महाप्रबंधक (सतर्कता)
50	दीपक रस्तोगी	अपर महाप्रबंधक (अभियांत्रिकी)
51	केजी सारदा	अपर महाप्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
52	संजय कुमार मेहता	अपर महाप्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
53	ब्रहम पाल सिंह तोमर	पर्यवेक्षक (उत्पादन)
54	बाबू राम	पर्यवेक्षक (उत्पादन)
55	वीरेंद्र सिंह	पर्यवेक्षक (उत्पादन)
56	सोदान सिंह	पर्यवेक्षक (उत्पादन)
57	चीराग सिंह	तकनीशियन ग्रेड-I
58	होरी लाल	सहायक (कृषि) ग्रेड-II
59	ग्यासू राम	कनिष्ठ अभियंता ग्रेड-III
60	ठाकुर सिंह	सहायक (लेखा) ग्रेड-I

क्र. सं.	कर्मचारी का नाम श्री / श्रीमती	पदनाम
61	गोपाल किशोर	वरिष्ठ आशुलिपिक ग्रेड-I
62	धर्म पाल बिश्नोई	पर्यवेक्षक (उत्पादन)
63	लायक सिंह	पर्यवेक्षक (उत्पादन)
64	शिश पाल तोमर	पर्यवेक्षक (उत्पादन)
65	केशव देव वाशिष्ठ	पर्यवेक्षक (उत्पादन)
66	आत्मा राम	पर्यवेक्षक (उत्पादन)
67	पद्म कुमार	पर्यवेक्षक (उत्पादन)
68	सागर	कनिष्ठ अभियंता ग्रेड-II (सिविल)
69	गौरव भारद्वाज	कनिष्ठ अभियंता ग्रेड-II (सिविल)
70	शिव पाल सिंह	प्रबंधक (उत्पादन)
71	लक्ष्मी प्रसाद बंजारे	सहायक प्रबंधक (उत्पादन)
72	मोहित कुमार पुरवाड़	उत्पादन अधिकारी
73	रईस अबास	उत्पादन अधिकारी
74	रामाकांत	उत्पादन अधिकारी
75	प्रदीप कुमार मिश्रा	उत्पादन अधिकारी
76	नीरज कुमार यादव	उत्पादन अधिकारी
77	आनंद कुमार सिंह	उत्पादन अधिकारी
78	हेमलता वर्मा	उत्पादन अधिकारी
79	देवी दास नवंगे	उत्पादन अधिकारी
80	अमन महाजन	लेखा अधिकारी
81	राम नाथ तिवारी	मानव संसाधन अधिकारी
82	वीपी यादव	निजी सचिव
83	डी अश्विन	प्रोग्रामर ग्रेड-I



क्र. सं.	कर्मचारी का नाम श्री / श्रीमती	पदनाम
84	एक शिवारासन	प्रबंधक (उत्पादन)
85	जयपाल सिंह	प्रबंधक (उत्पादन)
86	जगजीत सिंह मंगल	पर्यवेक्षक (लेखा)
87	ओम वीर सिंह	सहायक अधिकारी (बीज)
88	हरि राम पोटिला	सहायक अधिकारी (बीज)
89	राम कुमार	सहायक अधिकारी (बीज)
90	जयवीर सिंह तोमर	सहायक अधिकारी (बीज)
91	प्रमोद कुमार	सहायक अधिकारी (बीज)
92	हरिदत्त शर्मा	सहायक अधिकारी (बीज)
93	जितेन्द्र सिंह	सहायक अधिकारी (बीज)
94	आनंद कुमार सिंह	पर्यवेक्षक (उत्पादन)
95	जय प्रकाश शर्मा	पर्यवेक्षक (विपणन)
96	दीप शर्मा	पर्यवेक्षक (विपणन)
97	सौरभ गोयल	पर्यवेक्षक (विपणन)
98	अनिल कुमार शर्मा	पर्यवेक्षक (मा.सं)
99	ईश्वर सिंह	पर्यवेक्षक (मा.सं)
100	राजू	पर्यवेक्षक (मा.सं)
101	धर्म राम	पर्यवेक्षक (मा.सं)
102	मंजूला शर्मा	पर्यवेक्षक (लेखा)
103	सतीश कुमार	वरिष्ठ वाहन चालक ग्रेड-II
104	श्री मोहन राजोरा	वरिष्ठ वाहन चालक ग्रेड-II
105	आरके झरवड़े	वरिष्ठ वाहन चालक ग्रेड-II
106	अशोक एल मखवाना	वरिष्ठ वाहन चालक ग्रेड-II
107	हरी नारायण शुक्ला	तकनीशियन ग्रेड-I

क्र. सं.	कर्मचारी का नाम श्री / श्रीमती	पदनाम
108	दिनेश चंद पांडे	तकनीशियन ग्रेड-I
109	धनुष धारी	तकनीशियन ग्रेड-I
110	मोहर सिंह	तकनीशियन ग्रेड-I
111	महेश कुमार	तकनीशियन ग्रेड-I
112	डेज़ीनेनी ललिता	तकनीशियन ग्रेड-I
113	मंगल सिंह	तकनीशियन ग्रेड-I
114	रमेश चंद्र	ट्रैसर ग्रेड-I
115	सोमनाथ शर्मा	सहायक (कृषि) ग्रेड-II
116	सी माल्लिकार्जुन	सहायक (कृषि) ग्रेड-II
117	सतीश कुमार	सहायक (लेखा) ग्रेड-II
118	शंकर लाल नायक	सहायक (लेखा) ग्रेड-II
119	वी प्रभाकर	सहायक (लेखा) ग्रेड-II
120	रैप्पली रमेश	सहायक (लेखा) ग्रेड-II
121	बीजी हेमाचंद्र	सहायक (लेखा) ग्रेड-II
122	विष्णु अग्रवाल	सहायक (लेखा) ग्रेड-II
123	सचिन यादव	सहायक (लेखा) ग्रेड-II
124	अब्दुल है अंसारी	सहायक (लेखा) ग्रेड-II
125	नीलम शर्मा	सहायक (लेखा) ग्रेड-II
126	गौरव वशिष्ठ	सहायक (लेखा) ग्रेड-II
127	सौरभ गुप्ता	सहायक (लेखा) ग्रेड-II
128	विजय कुमार वर्मा	सहायक (लेखा) ग्रेड-II
129	पीके द्विवेदी	प्रोग्रामर ग्रेड-II
130	चेतन चौहान	प्रोग्रामर ग्रेड-II
131	सत्य देव	बहुउद्देशीय परिचर

क्र. सं.	कर्मचारी का नाम श्री / श्रीमती	पदनाम
132	ईश्वर यादव	बहुउद्देशीय परिचर
133	शंकर प्रसाद यादव	बहुउद्देशीय परिचर
134	गुलाब चंद यादव	बहुउद्देशीय परिचर
135	देवकांत झा	बहुउद्देशीय परिचर
136	उरबा दत्त तिवारी	बहुउद्देशीय परिचर
137	जी सरस्वती	बहुउद्देशीय परिचर
138	साधु राम	बहुउद्देशीय परिचर
139	जय दत्त मिश्रा	बहुउद्देशीय परिचर
140	मणिक चंद	बहुउद्देशीय परिचर
141	बीएन अनप्पास्वामी	बहुउद्देशीय परिचर
142	दीवान सिंह	बहुउद्देशीय परिचर
143	रतन लाल	वरिष्ठ प्रयोगशाला परिचर
144	एस संजीवारैयडू	वरिष्ठ प्रयोगशाला परिचर
145	कन्हैया लाल	सहायक (मा.सं) ग्रेड-I
146	रत्न वाई क्रिश्चियन	सहायक (मा.सं) ग्रेड-I
147	आशा रानी	सहायक (मा.सं) ग्रेड-I
148	रामाकांत	सहायक (मा.सं) ग्रेड-I
149	आर भीषापति	सहायक (मा.सं) ग्रेड-I
150	बलजिंद्र सिंह	सहायक (मा.सं) ग्रेड-I
151	मीना रैना	सहायक (मा.सं) ग्रेड-I
152	प्रभा शंकर सिंह	सहायक (लेखा) ग्रेड-I
153	केबी सूद	सहायक (लेखा) ग्रेड-I

क्र. सं.	कर्मचारी का नाम श्री / श्रीमती	पदनाम
154	प्रदीप कुमार	सहायक / (लेखा) ग्रेड-I (एसजी)
155	दिनेश कावता	सहायक / (लेखा) ग्रेड-II (एसजी)
156	अशोक कुमार	प्रोग्रामर ग्रेड-IV
157	अनिरुध कुमार	कंप्यूटर सहायक ग्रेड-II (एसजी)
158	सोबाबीर सिंह शिरोन	कंप्यूटर सहायक ग्रेड-II (एसजी)
159	वेनू गोपाल वॉकटी	कंप्यूटर सहायक ग्रेड-II (एसजी)
160	पूजा	कंप्यूटर सहायक ग्रेड-II (एसजी)
161	नरेंद्र जाटव	कंप्यूटर सहायक ग्रेड-II (एसजी)
162	राजवीर कटारिया	कंप्यूटर सहायक ग्रेड-II (एसजी)
163	डी नागराज	सहायक (स्टोर) ग्रेड-I
164	राजेंद्र प्रसाद पगोलू	सहायक (स्टोर) ग्रेड-I
165	राम विलास	सहायक (स्टोर) ग्रेड-I
166	यत्रेंद्र कुमार	सहायक (स्टोर) ग्रेड-I
167	अजय कुमार यादव	सहायक (स्टोर) ग्रेड-I
168	राजेंद्र कुमार	सहायक (स्टोर) ग्रेड-I
169	सिद्धार्थ चिकारा	बागवानी अधिकारी
170	उत्तम श्रीवास्तव	सहायक (स्टोर) ग्रेड-I



केन्द्रीय सतर्कता आयोग प्रतिज्ञा प्रमाण पत्र


सत्यमेव जयते



केन्द्रीय सतर्कता आयोग
प्रतिज्ञा प्रमाणपत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

NATIONAL SEEDS CORPORATION LIMITED

ने ईमानदारी की प्रतिज्ञा ली है तथा अपने कार्चकलापों के संचालन में सत्यनिष्ठा एवं सुशासन के उच्चतम मानक बनाए रखने का तथा नीतिपरक पद्धतियों का पालन करने का वचन दिया है।

नीलग साहनी
नीलग साहनी
सचिव


3668022496

केन्द्रीय सतर्कता आयोग, सतर्कता भवन, जी.पी.ओ. कॉम्प्लेक्स, आईएनए, नई दिल्ली 110023
दूरभाष: 011 24600200 (30 लाइनें), फैक्स नं०. 011 24651010/24651186, वेबसाइट: www.nsc.in


राष्ट्रीय बीज निगम लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)

कार्चकलापों के निर्यात
फार्म सीना


चक्की फ्रेश आटा
Net Wt. : 4 kg




राष्ट्रीय बीज निगम लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)

कार्चकलापों के निर्यात
फार्म सीना

बासमती चावल 1121
Net Wt. : 2 kg



निगम
के
मूल्य
संबंधी
उत्पाद

सब्जियों के उन्नत बीज

क्र.स.	फसल	एन.एस.सी. द्वारा उत्पादित किस्मों के बीज	बुवाई का समय	बीज दर (किलो) प्रति हैक्टर)	पैदावार कु./है. अनुकूल परिस्थितियों में
1.	पालक	ऑल ग्रीन, पूसा भारती	सितम्बर-फरवरी	20-25	125-200
2.	बैंगन	अर्का कुसुमाकर, पूसा परमल, लौंग पूसा क्रान्ति, पूसा उत्तम, पूसा संकर 5.6 एवं 9, संकर मंजरी, संकर हरा अंडाकार तथा लम्बा	जनवरी-फरवरी मई-जून	0.400-0.500 0.15-0.20 (संकर)	200-400 400-700
3.	भिंडी	अर्का अनामिका, वर्षा उपहार, परभनी क्रान्ति, पूसा ए-4	फरवरी-मार्च जून-जुलाई	12-15 8-10 (वर्षा ऋतु में)	90-150
4.	मिर्च	पंत चिली-1, जी-4, एक्स-235, पूसा सदाबहार, संकर-1 से 10	नवम्बर-जनवरी, मई-जून	0.800-1.00 0.200-0.150	85 120-150 (संकर)
5.	टमाटर	पूसा रूबी, पूसा अर्ली डवार्फ, अर्का विकास, पूसा संकर-4 एवं 8, संकर भारती, संकर शिवालिक, संकर चतुर्भुज, संकर वर्षा	नवम्बर-दिसम्बर अगस्त-सितम्बर	0.500 0.120-0.150 (संकर)	250-400 350-400
6.	लोबिया	पूसा कोमल, पूसा सुकोमल अर्का गरिमा	फरवरी-मार्च जून-जुलाई	10-20	80-100
7.	खीरा	पॉइनसेट, ग्रीन लॉग	फरवरी, जून-जुलाई	2.5-3	150-200
8.	खरबूजा	हरा मधु, मधुरस, हाईब्रिड मीठा पंजाब नं.-1	फरवरी-मार्च	2-25 1-1.5 (संकर)	100-200 150-200 (संकर)
9.	तरबूज	शुगर बेबी, ए.वाई, संकर रजनी	फरवरी	4-5 2-2.5 (संकर)	100-150 250-250 (संकर)
10.	लौकी (घिया)	पूसा नवीन, पी. एस.पी.एल. पूसा संदेश, संकर श्रमजीवी, पूसा संकर-3	फरवरी-मार्च जून-जुलाई	4-5 2-2.5 (संकर)	200-300 250-300 (संकर)
11.	टिंडा	अर्का, लुधियाना	फरवरी-मार्च जून-जुलाई	4-5	100-150
12.	करेला	कोयम्बटूर लॉग, प्रीति, बी.जी.-14, अर्का, हरित, पूसा विशेष, संकर सदाबहार, संकर पूर्णिमा	फरवरी-मार्च जून-जुलाई	5-7 1-2 (संकर)	150-200 175-250 (संकर)
13.	तोरी	पूसा सुप्रिया, पूसा चिकनी, पूसा स्नेहा	फरवरी-मार्च जून-जुलाई	4-5	125-150
14.	सीताफल	आमबली, सोना, अर्का चंदन	फरवरी, जून-जुलाई	4-5	400-425
15.	फूलगोभी	पूसा अर्ली, सिंथेटिक, पूसा कार्तिक संकर	जून-जुलाई	0.5-0.65	100-150



An ISO 9001 : 2008 &
14001 : 2004 Certified Company

राष्ट्रीय बीज निगम लिमिटेड

(भारत सरकार का उपक्रम-मिनीरत्न कम्पनी)

बीज भवन, पूसा परिसर, नई दिल्ली-110 012

दूरभाष : 25842672, 25842383, 25846292, 25846295 फ़ैक्स : 91-011-25846462